सागरिका

राजभाषा समर्पित अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका

वर्ष 2024-25
अंक 81

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू, डाक पेटी सं 4272
कोच्ची- 682036. भारत

कार्तिक पी.

(पुत्र) गंगा.के.एस.

जूनियर अधीक्षक

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

डॉ. सुधांशु त्रिवेदी, संसद सदस्य, राज्य सभा के कर कमलों से एमपीईडीए के सचिव श्री के एस प्रदीप भा व से पुरस्कार स्वीकार करते हुए।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 'क' 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र स्थित केन्द्रीय सरकार के मंत्रालय/ विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम तथा भारत सरकार के बोर्ड/ स्वायत्त निकाय/ ट्रस्ट/ सोसाइटी आदि को राजभाषा नीति के सर्वोत्तम कार्य निष्पादन एवं कार्यालय में राजभाषा के बहतरीन कार्यान्वयन के लिए प्रति वर्ष राजभाषा का सर्वोत्तम पुरस्कार "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" दिया जाता है।

वर्ष 2023-24 का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (तृतीय पुरस्कार) समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण को प्राप्त हुआ।

श्रीमती प्रीति गर्ग, भा रा से, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, कोच्ची से वर्ष २०२२-२३ के लिए उत्तम राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी (द्वितीय पुरस्कार) स्वीकार करते हुए एमपीईडीए के डॉ. शरसी एस, उप निदेशक

श्रीमती प्रीति गर्ग, भा रा से, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, कोच्ची से वर्ष २०२२-२३ के लिए उत्तम राजभाषा कार्यान्वयन (द्वितीय पुरस्कार) हेतु प्रमाण पत्र स्वीकार करते हुए एमपीईडीए के राजभाषा अनुभाग की टीम

सागरिका

राजभाषा समर्पित अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका

संरक्षक

श्री डी.वी. स्वामी, भा.प्र.से, अध्यक्ष

मार्गदर्शक

श्री के.एस. प्रदीप, भा.व.से. सचिव

श्री अनिल कुमार पी., सचिव

संपादक

श्रीमती अंजु, सहायक निदेशक

उप संपादक

डॉ. प्रदीप राज पी., वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

संपादन सहयोग

श्रीमती सिंधु ए एस, राजभाषा लिपिक

सुश्री शीतल पी एस, क. लिपिक

कवर पेज डिजाइन: सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक

पत्राचार का पता

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू,
डाक पेटी सं 4272, कोच्ची- 682036, भारत
दूरभाष - 91 -484 - 2323245
फैक्स - 91 - 484 - 2313361

अनुक्रमणिका

हिंदी भाषा की जान 11
कालूचक से गूँज 12
कुछ पल अपना सा 14
आशा 15
एमपीईडीए द्वारा हांगकांग के लिए एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल का आयोजन 16
क्या झील (कायल) में रहने वाले केकड़े विलुप्त हो रहे हैं 20
लेखक परिचय- डॉ. रामदरश मिश्र 22
लेखक परिचय- विनोद कुमार शुक्ल 24
अजीबोगरीब शहर 26
हिन्दी भाषा और नवाचार 29
वक्त रुकता नहीं 32
सिर्फ और सिर्फ मेरे लिए 34
वक्त नहीं 35
हकीकत ज़िन्दगी की 36
सर्दी 37
हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2024-25 38
कवर पेज प्रतियोगिता 43
एमपीईडीए, क्षेत्रीय उप क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी दिवस 44
प्रकृति की यात्रा 46
प्ररणा और उत्साह प्रदान करने वाले वाक्यांश 48
साइबर अपराध डिजिटल युग में बढ़ता खतरा 49
एक यादगार अनुभव- अजनबियों की दयालुता 52
मदर इंडिया एक भूमिका 53
भारतीय भाषाओं की समृद्ध विरासत 55
चिंतन शिविर 59
शिक्षण योजना 62
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 63
हिन्दी कार्यशाला एवं राजभाषा संगोष्ठी 64
प्रोत्साहन योजनाएं 65
ई-फाइलों में हिन्दी में नोट एवं मसौदा लेखन हेतु वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ 67

डी वी स्वामी भा प्र से
अध्यक्ष

सत्यमेव जयते

प्रेरणोक्ति

उत्पादन और निर्यात दो प्रमुख क्षेत्र हैं जो किसी भी देश के विकास और प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। एमपीईडीए पिछले **50** वर्षों से समुद्री खाद्य निर्यात को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। वित्तीय वर्ष **2023-24** के दौरान, भारत ने अब तक की सर्वाधिक मात्रा **17,81,602** मैट्रिक टन समुद्री खाद्य का निर्यात किया, जिसका मूल्य **7.38** बिलियन अमेरिकी डॉलर और **60,523.89** करोड़ रुपए था।

एमपीईडीए हमेशा गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की राजभाषा नीतियों का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। राजभाषा नीति के सभी पहलुओं को आत्मसात करके एमपीईडीए अपने मुख्यालय और सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी का कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है। हिंदी दिवस के अवसर पर हर साल बड़े उत्साह के साथ हिंदी पखवाड़ा और राजभाषा समागम का आयोजन एमपीईडीए की राजभाषा हिंदी के प्रति भावना को दर्शाती है। एमपीईडीए को राजभाषा के सर्वोत्तम कार्यान्वयन के लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग का वर्ष **2023-24** का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार तथा कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का वर्ष **2022-23** का राजभाषा शील्ड मिलना गर्व का क्षण था। मैं इस उपलब्धि के लिए प्राधिकरण के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देना चाहता हूँ।

एमपीईडीए के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सतत प्रयास से हिंदी की गृह पत्रिका सागरिका को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सर्वश्रेष्ठ हिंदी पत्रिका (वर्ष **2022-23** के लिए तृतीय पुरस्कार) का पुरस्कार दिया जा चुका है। यह उपलब्धि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी अटूट निष्ठा को दर्शाती है। मैं उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके अथक प्रयासों ने सागरिका को गुणवत्तापूर्ण विषय-वस्तु और सार्थक योगदान से समृद्ध किया है। सागरिका ने एमपीईडीए में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित ज्ञान साझा करने, रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं व्यावहारिक चर्चाओं के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया है।

आइए हम अपने मिशन को आगे बढ़ाते रहें, उत्कृष्टता को प्रेरित करें तथा आधिकारिक क्षेत्र में हिंदी की पहुंच को बढ़ाएं।

सागरिका के **81**वां अंक के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

स्वामी
डी वी स्वामी भा प्र से

डॉ एम कार्तिकेयन
निदेशक

अभिप्रेरण

पिछला वर्ष एमपीईडीए के लिए एक उल्लेखनीय यात्रा रही है, जिसमें महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ शामिल हैं। चाहे वह समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने में हो या गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की नीतियों के तहत कार्यालयीन कार्य में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करना हो।

एमपीईडीए में **14** सितंबर को हिन्दी दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। राजभाषा के कार्यान्वयन को सुदृढ़ बनाने हेतु विविध कार्यक्रम एवं प्रोत्साहन योजनाओं के रूप में एमपीईडीए अपने अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। सागरिका के माध्यम से हमारे कर्मचारियों के कलात्मक पक्ष को बढ़ावा मिलता है। पत्रिका के लिए उनके द्वारा लिखी गई कहानियाँ, कविताएँ आदि देखकर मुझे खुशी होती है।

मैं एमपीईडीए के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों तथा पाठकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आप सबके मिले जुले प्रयासों ने ही राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का वर्ष **2023-24** का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और वर्ष **2022-23** का कोच्ची टोलिक का राजभाषा शील्ड प्राधिकरण को हासिल करने में मददगार साबित हुई। गृह पत्रिका सागरिका को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सर्वश्रेष्ठ हिंदी पत्रिका (वर्ष **2022-23** के लिए तृतीय पुरस्कार) का पुरस्कार दिया जा चुका है। आपका समर्थन हमें अपनी यात्रा जारी रखने के लिए प्रेरित करता है।

मैं बड़े गर्व और उत्साह के साथ समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) की हिंदी गृह पत्रिका सागरिका का यह संस्करण प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह प्रकाशन हमारे हितधारकों के साथ गहरे संबंध बनाने और पेशेवर और रचनात्मक प्रयासों में हमारी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

सागरिका के **81**वां अंक के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

कार्तिकेयन

डॉ एम कार्तिकेयन

के.एस.प्रदीप भा.व.से
सचिव

उत्प्रेरण

विश्व हिंदी दिवस १० जनवरी को मनाया जाता है। यह दिन 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की वर्षगांठ का प्रतीक है। इस बार विश्व हिंदी दिवस 2025 का थीम था "एकता और सांस्कृतिक गौरव का वैश्विक स्वर"

हिंदी भाषा न केवल हमारे सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है, बल्कि यह सरकारी कामकाज में पारदर्शिता, सहजता और प्रभावशीलता का भी प्रतीक है। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रयोग और प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है।

एमपीईडीए भारत सरकार और गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित राजभाषा नीति से पूरी तरह अवगत है। यह संगठन न केवल इन नीतियों का पालन करता है, बल्कि अपने कामकाज में हिंदी को अपनाने के लिए निरंतर प्रयासरत भी है।

राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति प्राधिकरण के अधिकारियों/ कर्मचारियों के समर्पण के परिणामस्वरूप एमपीईडीए को वर्ष 2023-24 के लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार तथा वर्ष 2022-23 के लिए कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की राजभाषा शील्ड प्राप्त हुआ। इसके साथ ही गृह पत्रिका सागरिका को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सर्वश्रेष्ठ हिंदी पत्रिका (वर्ष 2022-23 के लिए तृतीय पुरस्कार) का पुरस्कार दिया जा चुका है। प्राधिकरण के अधिकारियों/ कर्मचारियों को बधाई।

सागरिका हिंदी कार्यान्वयन को निरंतर बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभात है तथा आशा है कि सागरिका का यह अंक एमपीईडीए के हिंदी को बढ़ावा देने के प्रयासों को नई दिशा देगा तथा राजभाषा हिंदी की प्रतिष्ठा को और भी ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

सागरिका के 81वां अंक के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

के एस प्रदीप

के.एस.प्रदीप भा व से

संपादक की कलम से

सागरिका के **81**वां संस्करण में आप सभी का स्वागत है। पिछले कई वर्षों की यह यात्रा बहुत शानदार रही है, जिसके दौरान हम सभी ने अपने जीवन के हर पहलू में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में काम किया है। चाहे वह गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा एमपीईडीए को प्राप्त होने वाला राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (वर्ष **2023-24** के लिए तृतीय पुरस्कार) हो या नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित हिंदी के सर्वोत्तम कार्यान्वयन के लिए प्राप्त होने वाली राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी (वर्ष **2022-23** के लिए द्वितीय पुरस्कार) और सर्वश्रेष्ठ हिंदी पत्रिका (वर्ष **2022-23** के लिए तृतीय पुरस्कार)। यह सफलता एमपीईडीए के प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी के सहयोग के बिना संभव नहीं है।

इस अवसर पर एमपीईडीए के प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी की हिंदी के प्रति रुचि और हिंदी में काम करने के उनके प्रयासों की सराहना किए बिना नहीं रहा जा सकता। हिंदी से संबंधित सभी कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी और सागरिका में हिंदी भाषा से संबंधित लेखों का योगदान इसका प्रमाण है।

इस अवसर पर मैं यह कहना चाहूंगी कि केन्द्र सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों का यह दायित्व है कि वे अपना दैनंदिन सरकारी काम-काज यथासंभव हिन्दी में करें।

मुझे एमपीईडीए के अधिकारियों द्वारा लिखी गई कविताओं, कहानियों और लेखों सहित सागरिका का वर्तमान संस्करण प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मुझे आशा है कि यह संस्करण पाठकों को नई सीमाओं को तलाशने के लिए प्रेरित करेगा और हिन्दी भाषा के प्रति उनकी रुचि भी बढ़ाएगा।

मैं पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी लेखकों और सहयोगियों को धन्यवाद देती हूँ और आपके अमूल्य सुझावों और सकारात्मक मार्गदर्शन की प्रतीक्षा करती हूँ।

अंजु

अंजु
सहायक निदेशक, मुख्यालय, कोच्ची

वर्ष २०२२-२३ की टोलिक की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का पुरस्कार (तृतीय पुरस्कार) सागरीका को प्राप्त हुआ। डॉ. शंकर प्रसाद के, भा रा से, आयकर आयुक्त, कोच्ची से पुरस्कार स्वीकार करते हुए एमपीईडीए के डॉ. शरसी एस, उप निदेशक

हिंदी भाषा की जान

श्रीमती महिमा रन वर्मा,
कनिष्ठ लिपिक, क्षेत्रीय प्रभाग,कोच्ची

हिंदी भाषा का थोड़ा आनंद लीजिए......मुस्कुराएँ
हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे हैं,
खाने-पीने की चीजों से भरे हैं...
कहीं पर फल हैं तो कहीं आटा-दालें हैं,
कहीं पर मिठाई है, कहीं पर मसाले हैं,
चलो, फलों से ही शुरु कर लेते हैं,
एक एक कर के सब के मजे लेते हैं...

आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,
कभी अंगूर खट्टे हैं,
कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं,
कहीं दाल में काला है,
तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती है,

कोई डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाता है,
तो कोई लोहे के चने चबाता है,
कोई घर बैठा रोटियां तोड़ता है,
कोई दाल-भात में मसूरचंद बन जाता है,
मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,
तो आंटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है,

सफलता के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते हैं,
आटे में नमक तो चल जाता है पर गेहूँ के साथ,
घुन भी पिस जाता है.
अपना हाल तो बेहाल है , ये मुंह और मसूर की दाल है,
गुड खातें हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड का गोबर कर बैठते हैं,
कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी ऊंट के मुँह में जीरा है,
तो कोई कभी कोई जले पर नमक छिडकता है,
किसी के दांत दूध के हैं तो कई दूध के धुले हैं,
कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है ,
किसी को छठी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छांछ को भी फूँक फूँक कर पीता है,
और दूध का दूध पानी का पानी हो जाता है,

शादी बूरे के लड्डू हैं,जिसने खाए वो भी पछताए
और जिसने नहीं खाए वो भी पछतातें हैं,
पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते हैं
और शादी के बाद दोनों हाथों में लड्डू आते हैं,
कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी के मुँह में घी शक्कर है,
सबकी अपनी अपनी तक़दीर है....
कभी कोई चाय-पानी करवाता है,
कोई मक्खन लगाता है,
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुँह मे पानी आ जाता है,
भाई साहब अब कुछ भी हो, घी तो खिछ्डी में ही जाता है,
जितने मुँह है उतनी बातें हैं,
सब अपनी-अपनी बीन बजाते हैं,
पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है ,
सभी बहरे हैं,बावरे है ये सब हिंदी के मुहावरे हैं...
ये गजब मुहावरे नहीं बुजर्गों के अनुभवों की खान हैं...
सच पूछों तो हिंदी भाषा की जान हैं...

कालूचक से गूँज: यादों में अंकित एक रात

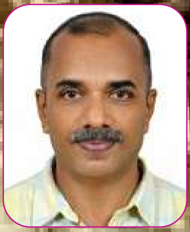

श्री. के वी प्रसन्नकुमार,
वरिष्ठ लिपिक,
क्षेत्रीय प्रभाग, कोच्ची

वर्तमान में भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ती शत्रुता के बारे में सोचते हुए, मुझे अपने जीवन के एक अविस्मरणीय दिन की याद आ गई, जब मैं 1999 में जम्मू के बाहरी इलाके में कालूचक नामक जगह पर भारतीय वायु सेना की रडार यूनिट में तैनात था।

यह वह समय था, जब मई 1999 में कारगिल में सैन्य संघर्ष के बादल मंडराने लगे थे। उस समय मैं अपनी पत्नी और सात महीने के बेटे के साथ हमारे सैन्य शिविर के गेट के ठीक बाहर एक किराए के कमरे में रह रहा था। हमारे मकान मालिक एक सहृदय व्यक्ति थे, जो विभाजन के बाद पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के मुजफ्फराबाद से जम्मू आकर बस गए थे। उन दिनों उनकी पत्नी और तीन बेटों के अलावा उनकी 80 वर्षीय सास भी उनके साथ रह रही थीं, जिन्होंने 1947 की भयावहता को प्रत्यक्ष रूप से देखा था।

उस समय हमारे घर में टीवी नहीं था।लेकिन, उस दिन, मैं शाम को मकान मालिक के घर पर टीवी समाचार देखने से खुद को रोक नहीं सका, क्योंकि उपमहाद्वीप में लगभग हर कोई क्रमशः पाकिस्तान और भारत के तत्कालीन विदेश मंत्रियों सरताज अजीज और जसवंत सिंह के बीच हुई बातचीत का परिणाम जानने के लिए उत्सुक था। मीडिया में यह खबर आई थी कि मंत्रियों के बीच उक्त बातचीत महत्वपूर्ण और निर्णायक होगी, क्योंकि रिपोर्टों के अनुसार पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की है।

जम्मू-कश्मीर में रहने वाले लोगों के मन में आसन्न युद्ध की भावना पैदा हो गई थी, क्योंकि राज्य भर में भारी सैन्य तैनाती थी। हमारे घर से केवल कुछ सौ मीटर की दूरी पर भारतीय सेना की विमान भेदी बंदूकें तैनात थीं, जो स्पष्टतः दुश्मन के विमानों को रोकने के लिए थीं, जो हमारे रडारों को नष्ट करने के लिए आ सकते थे। इससे भी बुरी बात यह थी कि हमारी रडार यूनिट भी पाकिस्तान की तोपखाने की रेंज में थी और युद्धकालीन तैयारी के रूप में, हमारी रडार यूनिट को अन्य शांतिपूर्ण क्षेत्रों से लाए गए कर्मियों के साथ बढ़ाया गया था। इसलिए, स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी।

जैसी कि आशंका थी, शाम के समाचारों में बताया गया कि वार्ता इस हद तक विफल हो गई कि दोनों मंत्रियों ने एक-दूसरे से हाथ मिलाने से भी इनकार कर दिया। उस रात, हम इस चिंता में डूबे हुए सोये कि युद्ध आसन्न था।कुछ ही घंटों बाद, विमान भेदी तोपों की गड़गड़ाहट से हमारी नींद खुल गई। जैसे ही मैं और मेरी पत्नी अपने बेटे को लेकर अपने कमरे से बाहर निकले, हमने पाया कि दूसरे घरों से भी लोग चिल्लाते हुए बाहर आये थे और शांति बनी रहे इसके लिए प्रार्थना कर रहे थे। सभी लोग अपने घरों से बाहर आ गए थे और उन्हें यह देखकर डर लग रहा था कि विमान भेदी तोपों से गोलीबारी हो रही थीं, जो अंधेरे में आसमान में उड़ती हुई विशाल लाल गेंदों की तरह लग

रही थीं। मेरे अंदर के सैनिक ने अनुमान लगाया कि दुश्मन का एक विमान आसमान में था और हमारी सेना की तोपों से उस पर गोलीबारी हो रही थीं। लेकिन मेरी पत्नी सहित घबराए हुए लोगों को किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं थी। मेरी पत्नी ने तो यहां तक सुझाव दिया कि युद्ध से बचने के लिए हमें उसी रात जम्मू से केरल के लिए निकल जाना चाहिए! मेरे मकान मालिक की दादी आँगन में रखी लकड़ी की खाट पर बैठकर जोर-जोर से चिल्ला रही थी, 'हे भगवान, लड़ाई न होने देना'। फिर मैं उनके पास गया और उन्हें सांत्वना देने की कोशिश की। लेकिन जब उन्होंने मुझे 1947 में भारत-पाक विभाजन के दौरान अपने भयावह जीवन के बारे में बताया तो मैं बहुत भावुक हो गया।

वह उस समय एक युवा महिला थीं और अपने माता-पिता और भाइयों के साथ मुजफ्फराबाद में रह रही थीं, जो अब पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में है, तभी अचानक से विभाजन का संकट उन पर आ पड़ा। विभाजन के बाद हुई सामूहिक हिंसा में, उनके पिता और भाइयों की उन लोगों द्वारा हत्या कर दी गई, जो यह चाहते थे कि उनके समुदाय के सभी लोगों को या तो ख़त्म कर दिया जाए या उनके घरों से बाहर निकाल कर नवगठित भारत में भेज दिया जाए (हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सीमा के इस पार भी ऐसी ही भयानक हिंसा हुई थी)। लेकिन फिर, वहां भी, सभी मानवता से परे नहीं थे। हालाँकि, उनके परिवार के सभी पुरुष सदस्यों की हिंसक भीड़ द्वारा हत्या कर दी गई थी, उन्हें और उनकी माँ को हमलावर भीड़ के उसी समुदाय के अन्य लोगों ने बचा लिया था। जब तक स्थिति सामान्य नहीं हो गई, तब तक उन्हें और उनकी माँ को गुप्त रूप से पड़ोसी घरों में शरण दी गई और फिर उन्हें अंधेरे की आड़ में सीमा पार करके भारतीय सीमा में जाने में मदद की गई। उन्होंने मुझे बताया कि इस भगदड़ में उनका सारा सामान लूट लिया गया। उन्होंने कहा कि अगर उनके पड़ोसियों ने उन्हें हिंसक भीड़ से बचाने के लिए जोखिम नहीं उठाया होता तो, वह और उनकी मां बच नहीं पातीं। मैं समझ सकता था कि उनके जीवन में आई दुःखद् घटना से उनका मन कितना आहत हुआ होगा। मुझे यकीन है कि भारत-पाक सीमा के दोनों ओर ऐसे हजारों लोग रहते हैं, जो उन परिवारों से हैं, जो बिना किसी गलती के क्रूर हिंसा और बड़े पैमाने पर विस्थापन के शिकार हुए थे। वे अभी भी ऐसी गहरी भावनाओं के साथ जी रहे होंगे, जबकि अन्यत्र रहने वाले हजारों लोग दोनों पड़ोसियों के बीच एक और युद्ध की मांग कर रहे हैं।

उस बातचीत ने मेरे भीतर कुछ गहरी भावनाएं जगा दीं। इससे मुझे एहसास हुआ कि कैसे विभाजन का सदमा सीमा के दोनों ओर अनगिनत लोगों के दिलों में चुपचाप जीवित है। वे लोग जिन्हें बेघर कर दिया गया, क्रूरता से प्रताड़ित किया गया, यौन उत्पीड़न किया गया तथा स्थायी रूप से ऐसी गंभीर स्थिति में धकेल दिया गया जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

अगले दिन, हमें पता चला कि यह वास्तव में एक पाकिस्तानी ड्रोन था, जो हमारे हवाई क्षेत्र में प्रवेश कर गया था और सुरक्षित बच निकलने में सफल रहा। लेकिन ड्रोन से कहीं अधिक जो चीज मेरे साथ रही, वह थी उस रात की यादें - निर्दोष लोगों के मन में भय, एक बुजुर्ग व्यक्ति की चीखें, तथा यह स्थायी आशा कि शत्रुता के बावजूद भी मानवता की जीत हो सकती है।

जैसे-जैसे हम शांति और संघर्ष के बीच नाजुक संतुलन बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं, मुझे उम्मीद है कि हम यह कभी नहीं भूलेंगे कि हर सीमा विवाद के पीछे असली लोग और परिवार हैं, जिनकी एकमात्र इच्छा शांति से रहना है।

मानवता कायम रहे!

कुछ पल अपना सा

श्रीमती अंजु
सहायक निदेशक, मुख्यालय, कोच्ची

राधा जल्दी जल्दी चलने लगी। मन में बस यही खयाल आ रहा था कि आज भी लेट हो जाऊंगी। इस हफ्ते यह तीसरी बार था। राधा हर दिन सोचती है कि आज समय पर निकलूंगी पर कोई न कोई वजह आ जाती है। कार्यालय पहुंचते ही दौडकर अपने कक्ष में बैग रख, हस्ताक्षर करने गई। बिना अपना सिर उठाए, झुके-झुके ही हस्ताक्षर कर दिए। फिर कुछ अधिकारी बोले इससे पहले ही अपने कक्ष में पहुंची। धीरे से काम शुरू किया, शाम होते होते काम के साथ, घर के लिए सामान, बच्ची की किताबें,सासु माँ की दवाइयां सब याद कर उसने एक लिस्ट बनाया। घर पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई। फिर बच्ची को पढाया, खाना बनाया और साफ सफाई करते-करते सुबह का कार्यक्रम मन में दोहराया। राधा कभी-कभार सोच में पड़ जाती कि उसे सांस लेने की भी फुरसत नहीं है, उसे ऐसा महसूस होता है कि जिंदगी एक भागती ट्रेन है और राधा उसमें सफर कर रही है। कितना कुछ बदल गया, शादी से पहले के वह दिन, दोपहर कि वह सुस्तियां, निकल पडते थे दोस्तों के साथ कोई सिनिमा देखने। किताबों में बितती थीरातें। कभी-कभार संगीत सुनकर थिरकती थी राधा के पायल। अब तो पांच मिनट अपने लिए कुछ कर लिया तो बुरा लगता है।कही अच्छी माँ, बहु, बीवी कहलाने से रह न जाऊँ, समाज क्या कहेगा।

एक दिन राधा श्याम घर पहुंची और बच्ची को पढाने बैठी। अचानक बिटिया बोली 'माँ, आज क्लास टीचर ने पूछा कि आप क्या बनना चाहते हो'? राधा ने उत्सुकता से बेटी को पूछा 'आप ने क्या जवाब दिया'? बच्ची मुस्कुराकर बोली 'अपनी माँ जैसी'। राधा चंद पलों के लिए कुछ बोल न पाई। बेटी के मासूम चहरे को कुछ पल देखती रही। हर बेटी अपने माँ के जैसे बनना चाहती हैं। अगर इन्हें पंख पसारने का मौका न दिया जाएं तो ये कैसे उड़ेंगी। राधा मुस्कुराई और बोली 'जरूर पर मुझ से बेहतर'।

फिर राधा अपने कमरे में गई और उन पुस्तकों पर से धूल साफ किया जो शायद कब से किसी के हाथों से पन्ने पलटने का इंतजार कर रहे थे। एक अजीब सा आनंद राधा के मन में उठा। शायद कुछ चीज़े जीवन में बदल जाए पर अपने आप को उसके अनुसार बदलना और हर व्यस्तता में भी अपना सुकून खोजना जरूरी है। राधा फिर से पंख पसार रही थी। अगली सुबह कि सूची में दोस्तों से मुलाकात के पल और थिरकते पैरों के लिए समय जोड रही थी।

आशा

डॉ. बिजी के बी,
तकनीकी अधिकारी,
क्षेत्रीय प्रभाग, कोच्ची

आशा चिट्टूर सरकारी उच्च विद्यालय में दूसरी कक्ष में पढ़ती है। आशा अपनी माँ सुनीता के साथ अपनी नाना-नानी के घर में रहती है। आशा की एक सहेली है जिसका नाम विनीता है। वो दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करती है। पिछले हफ्ते आशा के मौसा-मौसी घर आए थे।एक दिन आशा ने देखा की उसकी माँ और मौसी लंबे समय से बातचीत कर रहे हैं और बातचीत करते-करते उसकी माँ रो रही है। उस दिन आशाने देखा कि उसकी माँ की आंखों से आंसु यूं बह रहे थे कि जैसा कोई नदी बह रही हो। अपनी माँ को देख आशा भी उस दिन बहुत रोई थी। आशा को पता नहीं चला कि माँ क्यौं इतनी रो रही है। आशा अपने माँ को कहते बस यह सुन पाई कि 'मैं अपनी बेटी के लिए ही आज जी रही हूँ। नहीं तो मैं कब कि मर गई होती।' उस दिन से आशा सोच रही थी कि कैसे उसके माँ ने ऐसा कह दिया।

आशा पहले अपनी माँ और पापा के साथ शहर के एक बड़े मकान में रहते थे। अचानक एक दिन रात को माँ बहुत ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। आशा की आंख खुली तो उसने देखा कि माँ और पापा बहुत झगड रहे थे और उसी दिन माँ आशा को लेकर उसके नाना-नानी के घर आ गई थी। एक दिन आशा की सहेली विनीता ने उससे पूछा कि 'आशा क्या तुम्हारे मम्मी-पापा का तलाक होनेवाला है क्या, मेरी माँ आज किसी और से यह कहते सुना'। आशा ने विनीता से पूछा 'तलाक?' वह क्या होता है? 'तलाक होते समय मम्मी और पापा दोनो दो हो जाते हैं' विनीता ने कहा। आशा के मन में और सवाल आए- 'तो में कहाँ जाऊँगी?' विनीता ने कहा ' 'तुम मेरे घर आ जाना'। आशा को अपने पापा से बहुत डर लगता था। आशा जब अपनी माँ और पापा के साथ शहर में रहती थी तब आशा एक अंग्रेज़ी माध्यम की एक स्कूल में पढ़ती थी। उसकी कक्षा में जब सब बच्चे अपने पापा के बारे में बोलते थे तब आशा चुप-चाप बैठती थी। आशा के पापा उसे कभी भी अपने गोद में बिठाकर प्यार नहीं करते थे। पापा हमेशा गंभीर और व्यस्त दिखाई देते थे।

आशा कभी सोचती कि अगर माँ और पापा दो हो जाते हैं तो मुझे कैसे एक छोटी बहन मिलेगी। आशा मौका मिलने पर बीच-बीच में अपनी माँ से एक छोटी बहन की मांग करती थी और माँ हमेशा बोलती थी कि छोटी बहन को कही से लेकर नहीं आ सकते। वह एक साथ रहने वाले मम्मी-पापा को ईश्वर से प्राप्त उपहार होता है। एक दिन आशा ने वही बात दुबारा अपनी माँ से कहा तब सुनीता ने अपनी बेटी को बताया कि उसके पापा अपने कार्यालय के एक महिला अधिकारी से शादी करने वाले हैं। आशा यह बात जानती थी कि उसके पापा शहर में एक सरकारी कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारी हैं पर आशा को यह पता नहीं है कि पापा कौन से कार्यालय में काम करते हैं। आशा मन ही मन बोली कि- अगर उसे पता होता तो वह बोल देती कि उसको एक छोटी बहन देने के बाद पापा अपनी नई साथी के साथ चले जाए।

दो साल बीत गए। अब आशा चौथी कक्ष में पढ़ रही है। आशा अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आती है। आशा अपनी माँ के साथ खुश है। आशा की सहेली विनीता भी अपनी दोस्त से खुश है। एक दिन आशा जब अपनी स्कूल से वापस आई तो घर में दो और लोग थे। नानी ने आशा को पास बुलाकर धीरे से एक आदमी की तरफ इशारा करते हुए कहा कि यह अंकल तुम्हारे पापा होने वाले हैं।

दो महीने के बाद आशा की माँ ने उस आदमी से शादी कर ली और उसके घर चली गई। आशा को पता नहीं चला कि उसके मम्मी और पापा क्यों उसे छोडकर चले गए। अब आशा अपने नाना-नानी के साथ रहती है और उन्हीं को अपना मम्मी-पापा मानती है। नाना-नानी ही अब आशा की दुनिया है। आशा इतनी छोटी उम्र में अपनी मम्मी-पापा को खो चुकी थी। आशा अपनी नाना और नानी के साथ सोती है। कभी-कभी रातों में आशा नानी को चुपचाप रोती हुई देखती हैं, तो उदास हो जाती है और यही हमेशा आशा करती है कि वह अपने नाना-नानी के साथ खुशी-खुशी रहे और अच्छी तरह पढ़कर एक अच्छी इंसान बने।

सीजीआई और एमपीईडीए अधिकारियों के साथ बीएसएम के प्रतिभागी

डॉ. टी.आर. जिबिनकुमार
उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई

एमपीईडीए द्वारा हांगकांग के लिए एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल का आयोजन

एमपीईडीए ने हांगकांग के भारत का महावाणिज्य दूतावास के साथ मिलकर 26 से 30 मार्च 2024 तक हांगकांग के लिए एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल का आयोजन किया। इस प्रतिनिधिमंडल में भारत के समुद्री उत्पादों के पंजीकृत निर्यातक शामिल थे और इसका नेतृत्व एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग मुंबई के उप निदेशक, डॉ. टी आर जिबिन्-ाकुमार ने किया। प्रतिनिधिमंडल का मुख्य उद्देश्य हांगकांग में आयातकों के साथ क्रेता-विक्रेता बैठक (बीएसएम) आयोजित करने के लिए पंजीकृत निर्यातकों की एक टीम का नेतृत्व करना और हांगकांग के विभिन्न बाजारों, विशेष रूप से सूखी मछली के बाजारों का दौरा करना था।

इसमें 6 पंजीकृत निर्यातकों जैसे गोअन फ्रेश मरीन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, सैनरी एक्जिम प्राइवेट लिमिट`ड, केएमसी ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड, हरि मरीन प्राइवेट लिमिटेड, सबरी फूड प्रोडक्ट्स और सी जोन ओवरसीज ने भाग लिया।

हांगकांग को समुद्री उत्पादों के निर्यात की स्थिति

भारत ने वर्ष 2022-23 के दौरान हांगकांग को ₹499.17 करोड़ (US$ 62.75 मिलियन) मूल्य का 5396 मैट्रिक टन समुद्री खाद्य निर्यात किया। मछली के माव्स ने कुल निर्यात से आई कमाई में 30.1% का योगदान दिया। निर्यात से आई कमाई में प्रशीतित श्रिम्प ने 22.7% और शीतित पॉमफ्रेट ने 2.5% की कमाई की।

हांगकांग में समुद्री खाद्य का आयात

हांगकांग की सबसे अधिक प्रति व्यक्ति मछली की खपत है जो 65.82 किलोग्राम है। 2023 कैलेंडर वर्ष के दौरान हांगकांग 3561.7 मिलियन यूएस डॉलर मूल्य का समुद्री खाद्य आयात करता है। भारत ने इसमें 62.75 मिलियन यूएस डॉलर मूल्य का समुद्री खाद्य का योगदान दिया जो हांगकांग के कुल समुद्री खाद्य आयात का केवल 1.8% है।

1. सीजीआई हांगकांग में बैठकें

सुश्री रेनजिना मैरी वर्गीस,दूत (वाणिज्य) ने सुश्री सतवंत खनालिया,भारत का महावाणिज्य दूतावास के महावाणिज्य दूत के मार्गदर्शन में समन्वय का कार्य किया और प्रतिनिधिमंडल को सभी तरह की सहायता प्रदान किया। हांगकांग में स्थित सीजीआई कार्यालय ने भी व्यापक प्रचार किया और बीएसएम में भाग लेने के लिए आयातकों के साथ समन्वय किया।

2. एफएमओ, एबरडीन का दौरा

27 मार्च 2024 को, प्रतिनिधिमंडल ने एबरडीन मछली बाजार का दौरा किया जो हांगकांग में ताजा और जीवित मछली बाजार सह लैंडिंग केंद्रों में से एक है। बाजार कॉम्प्लेक्स में मछली विपणन संगठन (एफ एम ओ) का कार्यालय भी है। एफ एम ओ अधिकारियों के साथ बैठक के बाद, प्रतिनिधिमंडल ने उसी परिसर में जीवित और ताजा मछली बाजार का दौरा किया। प्रतिनिधियों को बाजार में विभिन्न स्टालों और थोक और खुदरा बिक्री के लिए मछलियों को जीवित और शीतित अवस्था में कैसे रखा जाता है, यह देखने का अवसर प्राप्त हुआ। एबरडीन हांगकांग के दक्षिणी जिले में एकमात्र मछली पकड़ने वाला पत्तन है और हांगकांग में पकड़ी जाने वाली करीब एक तिहाई मछलियाँ एबरडीन पत्तन पर उतारी जाती हैं।

एफएमओ अधिकारियों के साथ प्रतिनिधिगण

मछली विपणन संगठन (एफ एम ओ) एक स्व-वित्तपोषित, गैर-लाभकारी संगठन है, जिसकी स्थापना समुद्री मछली (विपणन) अध्यादेश (अध्याय 291) के तहत की गई है। इसकी स्थापना मूल रूप से 1945 में मछुआरों को उत्पादन फिर से शुरू करने में सहायता करने और समुद्री मछली के थोक और विपणन सेवाएँ प्रदान करने के लिए की गई थी। एफ एम ओ मत्स्य पालन को विकसित करने और मछुआरों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए काम करता है। कार्यालय का नेतृत्व कृषि, मत्स्य पालन और संरक्षण निदेशक करते हैं। एफ एम ओ हांगकांग में 7 मछली थोक बाज़ार संचालित करता है, जैसे एबरडीन, शाऊ केई वान, क्वान टोंग, चेउंग शा वान, कैसल पीक, ताई पो और साई कुंग।

समुद्री मछली के विपणन को सुरक्षित करने के लिए एफ एम ओ वृत्तिदक्षता के साथ स्थानीय मछली पकड़ने के उद्योग और मत्स्य व्यापार क्षेत्र की सेवा करता है। एफ एम ओ जनता को समुद्री मछली की एक विश्वसनीय और स्थिर आपूर्ति भी बनाए रखता है और स्थानीय मत्स्य पालन के विकास का समर्थन करता है।

1. क्रेता-विक्रेता मिलन

हांगकांग के होटल कॉनराड के बोवेन रूम में क्रेता-विक्रेता बैठक आयोजित की गई। परिचयात्मक बैठक की अध्यक्षता सुश्री रेनजिना मैरी वर्गीस,दूत (वाणिज्य) ने किया। श्री हिमांशु गुप्ता, दूत (प्रेस, सूचना एवं संस्कृति) और चांसरी प्रमुख भी उपस्थित थे। दूत (वाणिज्य) ने परिचयात्मक टिप्पणी की, जिसके बाद सुश्री सतवंत खनालिया,महावाणिज्य दूत और श्री डी वी स्वामी,अध्यक्ष,एमपीईडीए के रिकॉर्ड किए गए वीडियो संदेश दिखाए गए। डॉ. टी आर जिबिनकुमार ने एमपीईडीए की गतिविधियों पर भाषण दिया और मत्स्य पालन संसाधन सह निर्यात संबंधी प्रदर्शन के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। बैठक में ग्यारह खरीदारों ने भाग लिया।

क्रेता-विक्रेता बैठक का दृश्य

2. शेउंग वान सूखी मछली बाज़ार का दौरा

शेउंग वान क्षेत्र का दौरा उस क्षेत्र में सूखी मछली बाजार को देखने के लिए व्यवस्थित किया गया था। विभिन्न सूखी मछली खुदरा / थोक दुकानों का दौरा किया और विभिन्न सूखे मत्स्य उत्पादों के प्रदर्शन को देखा। भारत से निर्यात के लिए प्रतिबंधित कई वस्तुएं जैसे समुद्री घोड़े, सी कुकुम्बर और शार्कफिन प्रदर्शन में पाए गए। दुकान मालिकों ने बताया कि हांगकांग में भारतीय मछली के माव्स की भी बहुत अच्छी मांग है।

शेउंग वान सूखी मछली बाजार का दौरा

शेउंग वान क्षेत्र में डेस वोक्स रोड वेस्ट, विंग लोक और को शिंग स्ट्रीट को हांगकांग के ड्राइड सीफूड स्ट्रीट और टॉनिक फूड स्ट्रीट के रूप में जाना जाता है। डेस वोक्स रोड वेस्ट का एक हिस्सा सूखे समुद्री खाद्य बेचने वाली दुकानों से भरा पड़ा है। इस क्षेत्र में व्यापार की शुरुआत कई दशकों पहले हुई थी। मछली के माव्स, शार्कफिन, सी कुकुम्बर, समुद्री घोड़े, नमकीन मछली, सॉसेज, स्कैलप्स, मशरूम और जड़ी-बूटियाँ जैसी सभी सूखी वस्तुएँ स्थानीय घरों की माँगों को पूरा करने के लिए प्रदर्शित किया गया था, खासकर चीनी नव वर्ष के आसपास। विंग लोक और को शिंग सड़कों के पास, हम जिन्सेंग और बर्ड्स नेस्ट का स्टॉक रखने वाली दुकानें देख सकते हैं, जिन्हें स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद माना जाता है।

3. ले यू मुन मछली पकड़ने वाले गांव का दौरा

शेउंग वान से प्रतिनिधिमंडल ले यू मुन के लिए रवाना हुए जहां मछली बाजार और रेस्तरां का दौरा किया गया। ले यू मुन और वहां के रेस्तरां पारंपरिक शैली में अद्वितीय समुद्री खाद्य पसंद करने वाले लोगों के लिए पसंदीदा स्थान हैं।

शेउंग वान में सूखी मछली की दुकानों का दौरा करती टीम

लेई यू मुन के गांव हांगकांग की सबसे पुरानी बस्तियों में से एक हैं और विशेष रूप से मध्य शरद ऋतु समारोह के दौरान समुद्री खाद्य प्रेमियों के लिए एक पसंदीदा पड़ाव है जिसे मून फेस्टिवल या मूनकेक फेस्टिवल के रूप में भी जाना जाता है। यह स्थान सैम का त्सुएन टाइफून शेल्टर के पास है जहां मछली पकड़ने वाली नावें खड़ी हैं। वहां से, एक पैदल प्रोमनेड आगंतुकों को मछली, केकड़ा, लोब्स्टर, श्रिम्प, बाइवाल्व्स, मोलस्क आदि सहित जीवित समुद्री जीवों के टैंकों से घिरे एक ढके हुए आर्केड में ले जाता है। आगंतुक रेस्तरां की श्रृंखला में टैंकों से जीवित समुद्री खाद्य चुन सकते हैं और वे उसे क्लासिक कैंटोनीज़ फैशन में तैयार करेंगे। रेस्तरां में, गेटवे कुजीन, हैप्पी सीफूड रेस्तरां और लुंग टैंग रेस्तरां पसंदीदा हैं।

4. सुपर मार्केट का दौरा

टीम ने कॉव्लून में कई सुपरमार्केट जैसे फेस्टिवल वॉक शॉपिंग सेंटर और एलिमेंट्स शॉपिंग सेंटर का भी दौरा किया। अधिकांश सुपरमार्केट में समुद्री खाद्य के लिए समर्पित क्षेत्र/तल हैं, जहाँ जीवित, शीतित, सूखा, प्रशीतित, खाने के लिए तैयार और पकाने के लिए तैयार समुद्री खाद्य उत्पादों के लिए अलग-अलग सेक्शन उपलब्ध कराए गए हैं। इन क्षेत्रों में ब्रेडेड उत्पादों को पकाने और सुशी उत्पादों को तैयार करने के लिए लाइव रसोई भी पाई गई।दुकान के परिचारकों और पर्यवेक्षकों ने बताया कि अधिकांश जीवित और शीतित मछलियाँ चीन के प्रधान भूखंड और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से आ रही हैं। इंडोनेशिया, वियतनाम और भारत से मुख्यतः प्रशीतित श्रिम्प उत्पाद पाए गए।

5. सीजीआई के साथ समापन बैठक

29 मार्च 2024 को सीजीआई कार्यालय का दौरा किया और सुश्री रेन्जिना मैरी वर्गीस,दूत (वाणिज्य) के साथ बैठक हुई। दूत ने कम समय में प्रतिनिधिमंडल का समन्वय करने पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की। दूत ने हर साल अगस्त के दौरान निर्धारित एचकेटीडीसी फूड एक्सपो के दौरान इसी तरह का कार्यक्रम करने का सुझाव दिया, लेकिन उन्होंने कहा कि योजना कम से कम तीन महीने पहले शुरू करने की जरूरत है। दूत ने हांगकांग के साथ व्यापार करने में रुचि रखने वाले सभी निर्यातकों के डिजिटल ब्रोशर उपलब्ध कराने का भी अनुरोध किया, ताकि उनको परिचालित किया जा सके और भविष्य के कार्यक्रमों के लिए नेटवर्क बनाया जा सके।

फेस्टिवल वॉक शॉपिंग सेंटर के अंदर समुद्री खाद्य का सेक्शन

6. विविध दौरे

यूनाइटेड सेंटर के अंदर फ्यूजन एंड टेस्ट सुपरमार्केट में सीफूड सेक्शन का भी अतिरिक्त दौरा किया गया, जहां सीजीआई कार्यालय भी स्थित है। हांगकांग द्वीप के वान चाई नॉर्थ में हांगकांग कन्वेंशन एंड एक्सिबिशन सेंटर का भी दौरा किया गया, जो सीजीआई कार्यालय से पैदल की दूरी पर है। हांगकांग ऑब्जर्वेशन व्हील और मकाऊ फेरी टर्मिनल का भी दौरा किया गया, जो कन्वेंशन सेंटर के पास है। सुपरमार्केट के अलावा, सब्जियों, फलों, मछली और मांस के लिए हांगकांग भर में सुव्यवस्थित बाजार उपलब्ध हैं। वान चाई में ऐसे ही एक बाजार का भी दौरा किया गया और मछली के स्टालों की व्यवस्था का अवलोकन किया गया। प्रदर्शन में जीवित और शीतित मछलियाँ उपलब्ध थीं। अच्छी तरह से स्थापित जल निकासी और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के साथ बाजार में बनाए गए अत्यंत स्वच्छ परिस्थिति के कारण, हमें मछली के स्टालों के पास किसी भी तरह के दुर्गंध का अनुभव नहीं हुआ।

हांगकांग के लिए निर्यात बढ़ाने की सिफारिशें

1. चूंकि हांगकांग में प्रति व्यक्ति मछली की खपत अधिक है, इसलिए मछली के माव्स, जीवित और शीतित समुद्री खाद्य पदार्थों पर ध्यान केंद्रित कर भारत से निर्यात बढ़ाने की गुंजाइश है।
2. सीजीआई के सहयोग से अगस्त के दौरान प्रतिवर्ष आयोजित एचकेटीडीसी फूड एक्सपो के साथ-साथ बीएसएम किया जा सकता है।
3. हांगकांग के साथ व्यापार करने में रुचि रखने वाले निर्यातकों के विवरण के साथ एक डिजिटल ब्रोशर तैयार किया जाना चाहिए और सीजीआई के माध्यम से आयातकों, आयातक संघों और वाणिज्य मंडल को वितरित किया जाना चाहिए।
4. सीजीआई की सहायता से एक एजेंसी के जरिए बाजार की संपूर्ण जानकारी का आकलन करने के लिए बाजार अध्ययन किया जाना आवश्यक है।
5. भारत में रिवर्स क्रेता विक्रेता बैठकों के लिए सीजीआई के माध्यम से आयातकों को निमंत्रण दिए जाने की आवश्यकता है।
6. प्रसंस्कृत और सूखे सी कुकुम्बर, सिंग्नैथिड्स, शार्क फिन आदि के नियंत्रित निर्यात की संभावना का पता लगाया जा सकता है क्योंकि ऐसे उत्पादों की हांगकांग में बहुत अधिक मांग है।

अगर आप कविता लिखें

अगर आप जिसके खिलाफ कविता लिखें
और वही उस कविता की लोगों से करने लगे तारीफ
तो आपका क्या होगा,
आपकी कविता का क्या होगा,
आप उसका करेंगे क्या
तो उसको आप कहेंगे क्या
महामानव, महाकारुणिक या क्या
अगर आप किसी के अन्याय से तंग हो
उसकी हत्या करना चाहें
और वह आप की ही प्रशंसा करने लगे
आपके विरोध को जो आपके सामने ही
प्रेमजाल में बांधकर उसका वध कर डाले
अत्याचारी के अत्याचार के खिलाफ
आपमें उपजती घृणा और
प्रतिरोध को चूस जाए
आपके नकार को आप ही के खिलाफ कर दे,
जिसके खिलाफ आप लिखते हैं पर्चा
और यह पर्चा वह अपनी तारीफ में यूज़ कर ले
क्या करेंगे ऐसों का, कवि जी क्या करेंगे
जब पजाने के लिए न हो कोई पाट
तो अपने विचारों को कैसे तीक्ष्ण करेंगे
प्रतिरोध की कौन सी नई राह चुनेंगे

- बद्री नारायण

क्या झील (कायल) में रहने वाले केकड़े विलुप्त हो रहे हैं?

डॉ. के गणेश,
सहायक निदेशक, मुख्यलय, कोच्ची

पिछले कईं सालों से केकड़े मत्स्य व्यापार के क्षेत्र में आवश्यकता और कीमत के मामले में प्रथम स्थान पर है। पहले कीचड़ में रहने वाले केकड़े (मड़ क्राब) नाम से प्रसिद्ध इन केकड़ों को अब विज्ञान की दुनिया मैंग्रूव क्राब के नाम से पुकारती है। हालही में हुए जीनोम अध्ययन के अनुसार भारत में केवल सिल्ला (Scylla) जीनोम के तहत सिराटा (serrata) प्रजाति के हरे रंग के केकड़े और ओलिवेशिया (Olivacea) नामक लाल रंग के केकड़े ही मिलते हैं।

केरल में केकड़ों की खेती

केकड़ों की खेती में केरल के किसान केवल मोटा बनाना (Fattening) ही अब तक मुख्यतः करते आए थे। जल में रहने वाले केकड़े (Water crab) या 50 से 300 ग्राम के छोटे केकड़ों को 25 दिन से 4-5 महीनों तक बड़ा करने की रीति को मोटा बनाना बोलते हैं। जल्दी बड़े होने वाले, ज्यादा कीमत मिलने वाले तथा तालाब के दीवारों को खोदकर बाहर न जाने वाले हरे रंग के केकड़ों को ही किसान पसंद करते हैं। परंतु बदकिस्मती कह लो कि निर्यात और खेती के लिए केवल हमारे जलाशयों में मौजूद केकड़ों पर ही निर्भर रहने की वजह से वह अब विलुप्त होने के कगार पर है। यही नहीं कुछ साल पहले तक 100 रूपए से लेकर 150 रूपए तक कीमत वाले छोटे केकड़े (50 ग्राम से 300 ग्राम तक) अब 300 रुपए से लेकर 500 रूपए कि.लो. हो गए हैं। यह एक तथ्य है।

आवश्यकतानुसार केकड़े न मिलने के कारण किसान और केकड़ों को संचयित कर निर्यातकों को वितरण करने वालों के लिए आज संकट का दौर आ गया है। पहले निर्यात के लिए केवल 350 ग्राम से अधिक वजन वाले केकड़ों को ही हम संचयित करते थे, पर अब हम 50 ग्राम से अधिक वजन वाले केकड़ों को संचयित करने पर उनके पारिस्थितिक तंत्र और प्रजनन व्यवस्था पर भारी सकंट आया है।

केकड़ों का देश निकाला

350 ग्राम से अधिक वजन वाले केकड़ों को सिंगापूर, मलेशिया, चीन, हाँगकाँग, थाईलैंड, ताइवान जैसे अलग-अलग देशों में जिंदा निर्यात किया जाता है। समुद्री उत्पाद के निर्यात से प्राप्त होने वाले विदेशी मुद्रा का एक बड़ा हिस्सा भारत को केकड़ों से मिलता है। 750 ग्राम से अधिक वजन वाले एक किलो वाले केकडों को बेचने वाले किसानों को कम से कम 1800 रूपए मिलते हैं जो इस क्षेत्र के संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

अब छोटे केकड़ों का क्या होता है, इसकी जांच करते हैं। 50 ग्राम से 300 ग्राम तक के केकड़े ज़्यादातर आंध्र प्रदेश में पहुँचते हैं। वहाँ हजारों एकड़ों में किसान केकड़ों के कृषि कर रहे हैं। प्रति दिन 800 से 1000 किलो तक

के केकड़े रेल मार्ग से आंध्र प्रदेश पहुँचती हैं। तकरीबन 4 से 5 महीनों के बाद जब यह निर्यात योग्य वज़न प्राप्त कर लेता है तब यह केकड़े विदेश जाते हैं।

केकड़ों के बच्चों के उत्पादन

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण उसके अनुसंधान तथा विकास केंद्र आरजीसीए द्वारा तमिलनाडू के मयिलाडुदुरै जिला में केकड़ों के बीज उत्पादन केंद्र की स्थापना कर कार्य करता आ रहा है। साल में 10 लाख केकड़ों के बच्चों के उत्पादन क्षमता रखने वाले इन केन्द्रों से रोगमुक्त केकड़ों के बच्चों को कम दाम में किसानों को देने के साथ-साथ उन्हें विशेषज्ञ प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

केकड़ा पालनः केरल में उसकी संभावनाएं

केकड़ों के पालन के लिए कम से कम 10 पीपीटी वाले नमकीन पानी के तालाब उत्तम होते हैं। इन तालाबों में कम से कम 3 से मी बड़े केकड़ों के बच्चों (क्राबलेट) को डाला जाता है। इन्हें बाज़ार योग्य (750 ग्राम - 1 किलो) बनाने के लिए 8 से 9 महीने लगते हैं। कृषक संघ, कुडुम्बश्री

कृषि रीति	आधा से मी (0.5 से मी) बड़े केकड़ों के बच्चों (क्राब इन स्टार) को 3 से मी तक (क्राबलेट) बड़ा करें।	5 ग्राम बड़े केकड़ों के बच्चों को 80 ग्राम तक बड़ा करें। (क्राबलेट टू जुवेनाइल क्राब)	5 ग्राम नहीं तो 80 ग्राम के केकड़ों को या तो जरूरतमंदों को बेच सकते हैं या उन्हें पाल सकते हैं।
वज़न	0.03-5 ग्राम	5-80 ग्राम	80-500 ग्राम
समयावधि	30-40 दिन	60 दिन	120-180 दिन
कैसे पालें	5 मी बटा 4 मी नाइलोन हाप्पा में	सीधा तालाब में या पेन (घ्ढ्ढद) कृषि करने वाले तालाब में पाल सकते हैं।	सीधा तालाब में या पेन (घ्ढ्ढद) कृषि करने वाले तालाब में पाल सकते हैं।

उद्यम निम्नलिखित कृषि रीतियों को अपना सकते हैं।

पेन कृषि का तरीकाः जाल का प्रयोग कर या प्लास्टिक मेष का प्रयोग कर तालाब को अलग-अलग हिस्सों में बाँट कर खेती करने का तरीका।

हैचरी में उत्पन्न किए गए केकड़ों के बच्चों को लेकर किए गए कृषि के रीत का अनुसरण करते हैं तो अवश्य ही विलुप्त होने की कगार पर पहुंचे हमारे केकड़ों की संपत्ति को बचाया जा सकता, इसमें कोई संशय की बात नहीं है। समुद्री उत्पाद के निर्यात के कोच्ची, कन्नूर स्थित केन्द्रों में किसानों की सहायता से आयोजित हैचरी बीज से किए गए प्रदर्शन खेती में प्राप्त सफलता भविष्य के केकड़ों की खेती की संभावनाओं की ओर दर्शाता है।

केकड़े आज खेती करने वाले जल-जन्तुओं में बाज़ार

में सबसे अधिक मूल्य वाले प्रकार हैं। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, अधिक कीमत प्राप्त होगा, इस यथार्थ को आत्मसात कर यदि काम करे तो, हैचरी से उत्पन्न केकड़ों के बच्चों को लेकर किए गए खेती से वित्तीय लाभ प्राप्त होने के साथ-साथ केकड़ों के विलुप्त होने के खतरों को भी एक हद तक समाप्त किया जा सकता है।

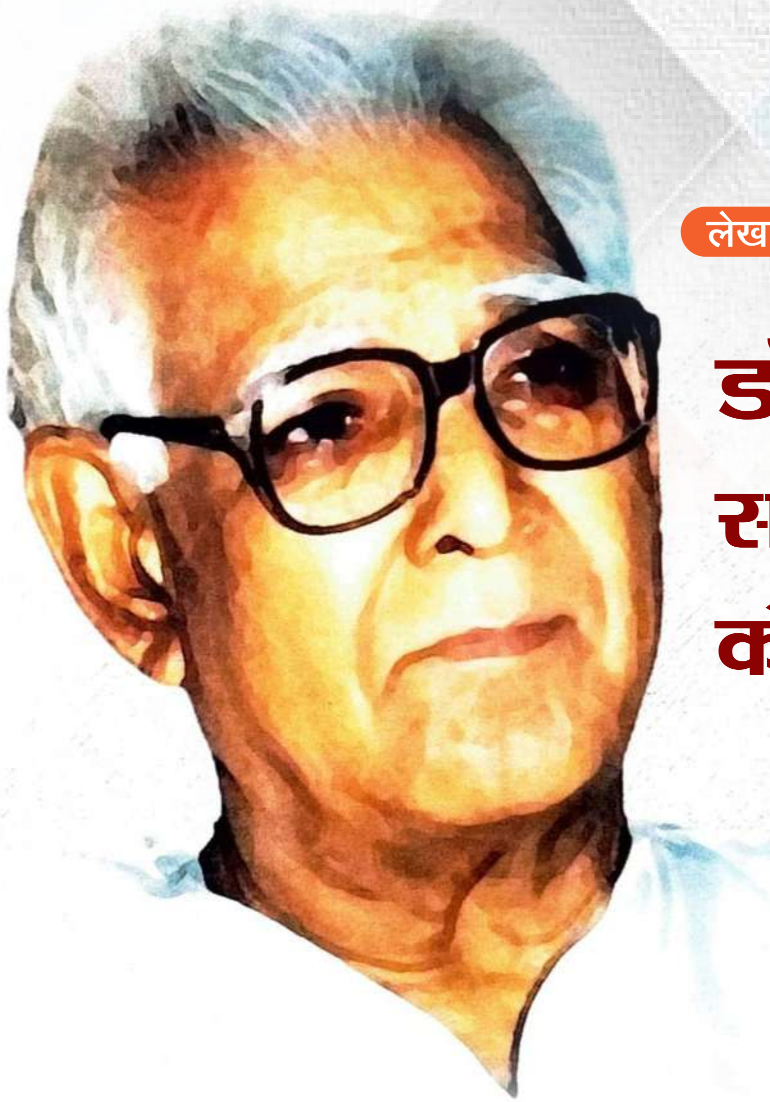

लेखक परिचय

डॉ. रामदरश मिश्रः साहित्यिक प्रतिभा के सौ वर्ष

डॉ. रामदरश मिश्र की जन्मशताब्दी उनके अद्वितीय साहित्यिक योगदानों को सम्मानित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। 15 अगस्त 1924 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के डुमरी गांव में जन्मे डॉ. मिश्र ने अपने ग्रामीण परिवेश से हिंदी साहित्य के शिखर तक का अद्भुत सफर तय किया। अपने लंबे और समृद्ध करियर में उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में योगदान देकर हिंदी साहित्य को गहराई और विविधता प्रदान की है।

साहित्यिक विरासत और विविधता

डॉ. मिश्र के साहित्यिक योगदान उनकी व्यापकता और बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाते हैं। कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, साहित्यिक आलोचना, आत्मकथा और यात्रा वृत्तांत जैसे विभिन्न क्षेत्रों में 100 से अधिक रचनाओं के साथ, उन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। उनकी कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं। 'पानी के प्राचीर' में उन्होंने मानवीय भावनाओं और समाज के संघर्षों को गहराई से चित्रित किया है। उनकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ, जैसेः

'बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे, देखा है दुनिया तुम्हारी मेहरबानी।'

'हम जहाँ से थे चले, क्या फिर वहीं आना हुआ।'

इन पंक्तियों में जीवन के संघर्ष और अनुभवों की गहराई को दर्शाया गया है। 'कंधे पर सूरज' में प्रकृति और जीवन के बीच के संबंधों को दर्शाया गया है। 'पक गई है धूप' में ग्रामीण जीवन की सादगी और संघर्षों को खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है। उनकी कविताओं में आशावाद और सकारात्मकता का स्वर प्रमुख है, जो पाठकों को जीवन की चुनौतियों के बीच भी प्रेरित करता है।

उनकी कहानियाँ भी गहरी संवेदनशीलता और सामाजिक यथार्थ को उजागर करती हैं। 'खाली घर' में उन्होंने

मानवीय संबंधों की जटिलताओं को चित्रित किया है। 'एक वह' में उन्होंने जीवन के विभिन्न पहलुओं को सरलता और गहराई से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ पाठकों को उनके आसपास की दुनिया को नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करती हैं।

विद्वान और शिक्षक

डॉ. मिश्र के आलोचनात्मक निबंध जैसे 'हिंदी उपन्यासः एक अंतरयात्रा' और 'हिंदी कविताः आधुनिक आयाम' हिंदी साहित्य के विकास और उसके सामाजिक प्रभाव को समझने के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं। उनकी आत्मकथा 'सहचर है समय' और यात्रा वृत्तांत 'तना हुआ इंद्रधनुष' पाठकों को उनके व्यक्तिगत अनुभवों और वैचारिक यात्रा का परिचय देते हैं।

एक शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में, डॉ. मिश्र ने युवा लेखकों और छात्रों को प्रेरित किया है। उनकी परंपरा और आधुनिकता के संयोजन की क्षमता ने उभरते साहित्यिक प्रतिभाओं को हिंदी साहित्य में नए प्रयोग और अनुसंधान के लिए प्रेरित किया है।

प्रभाव और महत्व

डॉ. मिश्र के कार्यों ने समकालीन हिंदी साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला है। उन्होंने ग्रामीण कहानियों को मुख्य धारा में लाकर हिंदी साहित्य के विमर्श का केंद्रीय भाग बना दिया। उनकी रचनाएँ सामाजिक चुनौतियों और सांस्कृतिक बदलावों को इस प्रकार चित्रित करती हैं कि वे समकालीन पाठकों के लिए प्रासंगिक बनी रहती हैं।

उनकी कविताओं और कहानियों में जीवन के विभिन्न पहलुओं को गहराई से चित्रित किया गया है। 'पानी के प्राचीर' जैसे उपन्यासों और 'पक गई है धूप' जैसे कविता संग्रहों के माध्यम से वे ग्रामीण भारत के संघर्ष और सौंदर्य को साहित्यिक स्वरूप देने में सक्षम हुए। उनकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ, जैसेः

'दर्द दुनिया भर का सीने में लिए जाते हैं हम।'

'देख ली दुनिया तुम्हारी मेहरबानी।'

इन पंक्तियों में उनके कवि मन की गहराई और जीवन के अनुभवों की झलक मिलती है।

डॉ. रामदरश मिश्रा, जो हिंदी के प्रतिष्ठित कवि और लेखक हैं, को साहित्य के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनके द्वारा प्राप्त किए गए कुछ प्रमुख पुरस्कार इस प्रकार हैंः

पद्म श्री (2025): यह भारत का चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है, जो उन्हें साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए प्रदान किया गया।

साहित्य अकादमी पुरस्कार (2015): यह पुरस्कार उन्हें उनकी साहित्यिक उत्कृष्टता के लिए प्रदान किया गया।

सरस्वती सम्मान (2021): यह प्रतिष्ठित सम्मान हिंदी साहित्य में उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदान किया गया।

जन्मशताब्दी का उत्सव

डॉ. रामदरश मिश्र की यात्रा केवल साहित्यिक उपलब्धियों की कहानी नहीं है। यह शब्दों की परिवर्तनकारी शक्ति का उत्सव है। उनकी रचनाएँ पीढ़ियों को प्रेरित करती हैं, जीवन की जटिलता और सुंदरता को समझने का मार्ग प्रदान करती हैं। उनकी जन्मशताब्दी इस बात की याद दिलाती है कि उनकी साहित्यिक धरोहर समय से परे है और आने वाले वर्षों में हिंदी साहित्य को प्रेरित करती रहेगी।

लेखक परिचय

विनोद कुमार शुक्ल: सरलता और गहराई के कवि

हालही में भारतीय ज्ञानपीठ ने वर्ष 2024 का 59 वें ज्ञानपीठ पुरस्कार की घोषणा की है। हिन्दी के विख्यात कवि, उपन्यासकार, और कहानीकार विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य के इस गौरवमय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिंदी के प्रतिष्ठित कवि, उपन्यासकार, और कहानीकार हैं, जो अपनी अनोखी शैली के लिए जाने जाते हैं, जिसमें सरलता और गहनता का अनूठा मेल है। उनका जन्म 1 जनवरी 1937 को छत्तीसगढ़ के राजनंदगांव में हुआ था। आधुनिक हिंदी साहित्य में उनका योगदान बेहद महत्वपूर्ण रहा है। शुक्ल जी की साहित्यिक यात्रा कविताओं, उपन्यासों और कहानियों में फैली हुई है, और उन्होंने भारतीय साहित्य में एक विशिष्ट स्थान हासिल किया है।

शुक्ल जी की रचनाएँ अक्सर मानवीय भावनाओं, रिश्तों, और रोजमर्रा की जिंदगी की सुंदरता पर केंद्रित होती हैं। उनकी कविताएँ जीवन के सार को इस प्रकार पकड़ती हैं कि वह पाठकों के दिलों में गहराई तक उतर जाती हैं। उनका पहला कविता संग्रह 'लगभग जय हिंद' 1971 में प्रकाशित हुआ था, जिसने उनकी शैली को प्रस्तुत किया जो सरलता के साथ गहरी चिंतनशीलता का मेल कराती है। इससे वे हिंदी साहित्य में एक प्रिय हस्ती बन गए।

उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं:

'नौकर की कमीज़': यह उपन्यास मणि कौल द्वारा बनाई गई एक फिल्म के रूप में भी अनुकूलित किया गया, जिसमें शुक्ल ने सामाजिक मानदंडों और मानवीय रिश्तों की गहराई को समझाया है।

'दीवार में एक खिड़की रहती थी': यह उपन्यास 1999 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुआ और इसका अनुवाद अंग्रेजी में भी किया गया। यह रोजमर्रा की जिंदगी और मानवीय संबंधों की सूक्ष्म बारीकियों को उजागर करता है।

'लगभग जय हिंद': यह काव्य संग्रह साधारण में असाधारण को दर्शाता है और जीवन को उसकी सबसे वास्तविक छवि में प्रस्तुत करता है।

शुक्ल जी की कविताएँ अक्सर गहन मानवीय अनुभवों और भावनाओं से संबंधित विषयों पर आधारित होती हैं, जैसे:

साधारण और असाधारण: वे रोजमर्रा की जिंदगी में सुंदरता और अर्थ ढूंढते हैं और सामान्य पलों को गहरी सोच-विचार के रूप में बदल देते हैं।

मानवीय संबंध: यह उनकी कृतियों का केंद्रीय विषय है, जिसमें वे रिश्तों, सहानुभूति, और लोगों के बीच साझा अनुभवों को व्यक्त करते हैं। छोटे इशारों, अनकही भावनाओं, और समझ के क्षणों के माध्यम से, शुक्ल जी ने दिखाया है कि मानव अस्तित्व का आधार एक दूसरे से जुड़ाव और परस्पर देखभाल में निहित है।

अस्तित्व और वास्तविकताः शुक्ल जी जीवन, दृष्टि, और वास्तविकता की प्रकृति के बारे में दार्शनिक सवालों पर विचार करते हैं और गहन व चिंतनशील अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करते हैं।

प्रेम और अनिश्चितताः प्रेम की जटिलताओं और अप्रत्याशितता को पकड़ते हुए, उन्होंने मानवीय भावनाओं को अद्वितीय गहराई और सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है।

सामाजिक संवेदनशीलताः उनकी रचनाएँ सामाजिक मुद्दों पर गहरी समझ को दर्शाती हैं, जिसमें समाज के हाशिए पर रहने वाले समुदायों के संघर्ष शामिल हैं। इससे उनकी कविताएँ न केवल समय से परे बल्कि सामाजिक रूप से प्रासंगिक भी बनती हैं।

उनकी कुछ प्रसिद्ध कविताएँ हैं:

'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था': निराशा और मानव सहनशीलता पर गहन चिंतन, जो मानवीय भावना की गहराई को प्रकट करती है।

'प्रेम की जगह अनिश्चित है': प्रेम की अनिश्चितताओं को खंगालते हुए, यह कविताएँ रिश्तों की नाजुक लेकिन स्थायी प्रकृति को प्रकट करती है।

'दुनिया में अच्छे लोगों की कमी नहीं है': मानवता में अच्छाई का आशावादी गुणगान, जो विश्वास और सकारात्मकता पर जोर देती है।

'आँख बंद कर लेने से': दृष्टिकोण और वास्तविकता पर एक दार्शनिक दृष्टिकोण, जो हमारी दुनिया को देखने की सीमाओं को चुनौती देती है।

'कितना बहुत है': समृद्धि और अस्तित्व के सार पर विचार करते हुए, यह कविता शुक्ल जी के चिंतनशील दृष्टि कोण को दर्शाती है।

मानवीय संबंधःयह विषय विशेष रूप से विनोद कुमार शुक्ल जी की कविताओं में केंद्रीय है, जहां वे रिश्तों की बारीकियों और साझा अनुभवों को उजागर करते हैं जो व्यक्तियों को जोड़ते हैं। उनके मानवीय संबंध के चित्रण की कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं:

सहानुभूति और समझः उनकी कविताएँ सहानुभूति की गहरी भावना को दर्शाती हैं, यह दिखाती हैं कि लोग जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए कैसे एक-दूसरे से सहारा पाते हैं।

उनकी पंक्तियाँ इस भाव को उभारती हैं:

'दूसरों को सहारा देकर भी,
क्या अनजाने में कहीं सहारे मिलते हैं।'

छोटे पलों की सुंदरताः शुक्ल जी अक्सर साधारण क्षणों के माध्यम से मानवीय रिश्तों का सार पकड़ते हैं। एक मुस्कान, एक दयालु शब्द, या एक साझा चुप्पी, इन सबके माध्यम से व्यक्तियों के बीच संबंधों की मजबूती का प्रमाण बन जाती है।

'मौन के उस क्षण में, शब्द पीछे छूट जाते हैं।'

परस्पर निर्भरताः उनकी कविताएं यह संकेत देते हैं कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से जुड़े हुए हैं और आपसी समझ और सहयोग के माध्यम से प्रगति करते हैं।

'वो जो एक दूसरे के बिना अधूरे हैं,
क्या वही पूरी दुनिया के सच्चे हिस्से हैं।'

प्रेम और स्नेह के सूक्ष्म अभिव्यक्तिः बड़े घोषणाओं के बजाय, शुक्ल जी दैनिक जीवन के प्रेम और समझ की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

'प्रेम को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता,
उसका अर्थ हर अनकहे में छुपा रहता है।'

आशा और आशावादः कठिन परिस्थितियों में भी, उनकी कविताएँ अक्सर आशा की भावना को व्यक्त करती हैं।

'हर मुश्किल राह में, उम्मीद का एक दीप जलता है।'

शुक्ल जी की कहानी कहने की शैली उनके उपन्यासों, जैसे 'नौकर की कमीज़' और 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' में भी दिखाई देती है। ये उपन्यास सामाजिक मानदंडों और मानवीय संबंधों को इतनी सूक्ष्मता से प्रस्तुत करते हैं कि वे पाठकों पर एक अमिट प्रभाव छोड़ते हैं।

विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य अकादमी पुरस्कार, पी ई एन/नाबोकोव पुरस्कार, और ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

शुक्ल जी एक ऐसे कवि बने हुए हैं, जो दिल और दिमाग को जोड़ते हैं। उनकी कविताएँ जीवन की समृद्धि और मानवीय संबंधों की स्थायी सुंदरता को समर्पित हैं। उनकी पंक्तियाँ हमें उत्सुकता और आश्चर्य की दृष्टि से दुनिया को देखने के लिए प्रेरित करती हैं।

अजीबोगरीब शहर

श्रीमती महिमा रन वर्मा,
कनिष्ठ लिपिक, क्षेत्रीय प्रभाग,कोच्ची

शहर.....ये शब्द ज़ेहन में आते ही एक ऐसी बस्ती की छवि आंखो के आगे घूम जाती है जहां विशाल अट्टालिकाएं, चमचमाती सड़कें, मॉल, बगीचे और रात में जगमगाती रोशनी हो। पूरी दुनियां में शहरों का लगभग यही रूप दिखता है। गांवों में रहने वालों के लिए यह दूसरी दुनियां होती है पर आइए, हम बात करते हैं दुनियां के कुछ ऐसे शहरों की जो अपनी अनूठी विशेषताओं के चलते अलग ही रूप ले चुके हैं। इनकी ये विशेषताएं ऐसी हैं कि जो अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलती। तो चलिए, लीजिए झलक कुछ ऐसे शहरों की जो वास्तव में अनूठे होने के साथ-साथ अजीब भी हैं।

कालून शहर

चीन का यह शहर 16वीं शताब्दी में एक सैनिक बस्ती के रूप में स्थापित किया गया था। इस शहर की खासियत यह है कि यह दुनिया का सबसे घना बसा शहर है। हम दिल्ली वाले तो दिल्ली के पुराने गांवों की बस्ती देखकर ही ये कह देते हैं कि यह तो बहुत घनी बस्ती है पर जनाब! कालून शहर सिर्फ 6.5 एकड़ के क्षेत्र में बसा है जबकि यहां रहने वालों की तादात 40 से 50 हजार के बीच है। है न हैरतअंगेज आंकड़ा। इसीलिए इसे दुनिया का सबसे घना बसा नगर कहा जाता है। लंबे समय तक ब्रिटेन के कब्जे में रहने के बाद यह शहर 1947 में वापिस चीन के अधिकार में तो आया पर 1990 तक दोनों देशों के बीच तनातनी बनी रही। इस कारण यहां कानून-व्यवस्था ठीक नहीं रही, परिणामस्वरूप आपराधिक दलों का वर्चस्वक बढ़ने लगा।1991 में चीन ने

डिज़नीलैंड......

इसका सुधार किया और 1995 तक घनी झुग्गियों से उबार कर इसको वर्तमान स्ववरूप दिया।

डिजनीलैंड..... यह नाम सुनते ही हमारे ज़ेहन में बच्चों की ऐसी दुनियां की तस्वीर घूम जाती है जहां सिर्फ बाल सुलभ मस्ती हो, सपनों का संसार हो पर हम जिस डिज़नीलैंड की बात करने जा रहे हैं वह बच्चों की नहीं अपितु बुजुर्गों की मस्ती की दुनियां है। सच भी है, बुजुर्ग भी कहां बच्चों से कम होते हैं। न्यूयॉर्क के पास बसे इस शहर का अनौपचारिक नाम है डिज्नी वर्ल्ड फॉर ओल्ड पीपल्स क्योंकि इस शहर में सिर्फ बुजुर्गों को रहने की अनुमति है। इस शहर में 55 साल से ऊपर की उम्र वाले करीब 1 लाख लोग रहते हैं। रिटायरमेंट के बाद रहने के लिए यह अमेरिकियों की पहली पसंद है। 34 गोल्फ कोर्स, 9 कंट्री क्लब, कई रेस्टोरेंट और बार से संपन्न इस शहर की छटा ही निराली है।

स्लाम सिटी

क्या इस बात की कल्पना की जा सकती है कि एक बड़े शहर के कचरे के निस्तारण के लिए दूसरा शहर ही बसा दिया जाए। यह कल्पना सच हुई है मिस्र् में। वहां की राजधानी कायरो के पास यह बस्ती बसी है। 2009 में बढ़ती गंदगी की समस्या से कायरो को उबारने के लिए वहां का कूड़ा पास के इस शहर में लाकर डाला जाने लगा। इसीलिए इस जगह को स्लम सिटी बुलाया जाने लगा। इस शहर में करीब 60 हजार लोग रहते हैं। शहर के हर इंच पर कूड़ा पटा पड़ा है। इससे पहले साल 2008 में स्वाइन फ्लू का मुकाबला करने के लिए शहर के करीब साढ़े 3 लाख सुअरों को मार डाला गया था।

अध्यात्मिकता का शहर - लिली डेल

न्यूयॉर्क में लिली डेल नाम का एक शहर है। करीब 275 नागरिकों वाले इस नगर में रहने वाले सभी लोग अध्यात्म से जुड़े हुए हैं। सारे देश से हर साल 22 से 25 हजार लोग इनसे अध्यात्मिक शिक्षाएं लेने आते हैं। मजेदार बात यह है कि इन 275 लोगों के लिए यहां पोस्ट ऑफिस, फायर डिपार्टमेंट, लाइब्रेरी और म्यूजियम जैसी सभी सुविधाए हैं।

अंडरग्राउंड कूबर शहर

ऑस्ट्रेलिया में एडिलेड से 846 किमी दूर स्थित है कूबर शहर। यह शहर जमीन के अंदर बसा हुआ है। दरसल गर्मी से परेशान होने के बाद लोगों को खयाल आया कि क्यों न जमीन के नीचे रहा जाए ताकि सूरज के प्रंचड ताप से बचा जा सके और ये नगर विकसित किया गया। जमीन के अंदर रहने के बावजूद यह की लाइफ स्टाइल किसी भी महंगे बड़े शहर से कम नहीं है। बल्कि इस शहर में चर्च, स्टोर, गैलरी, होटल और भव्य मैंशन तक सभी तमाम लग्जरी सुविधाएं मौजूद हैं। इस जगह पर हॉलीवुड की कई बड़ी फिल्मों की शूटिंग भी हुई है।

ब्लू सिटी

जैसे भारत में जयपुर को पिंक सिटी भी कहा जाता है क्योंकि किसी समय में यहां के ज्यादातर घरों की दीवारें गुलाबी थीं। उसी तरह मोरोक्को का चेफचॉवेन नाम का शहर नीला या ब्लू सिटी कहलाती है। यह मोरोक्को का सबसे खूबसूरत शहर भी है। यहां घरों से लेकर हर चीज नीली है। इस शहर को 1930 में यहूदी विस्थापितों ने बसाया था। ये मोरोक्कोर के मशहूर पर्यटक स्थलों में से एक है और इसी लिए यहां करीब 200 होटल हैं जो पर्यटकों का स्वागत करते हैं।

मुर्दों का शहर

नाम पढ़कर थोड़ी हैरानी अवश्य हो सकती है पर ये सच है। अमेरिका में सैन फ्रांसिस्को के पास बने कोलमा नगर में जिंदा लोगों से कई गुना लोग दफन है। बताते हैं कि साल 1900 के आसपास जब सैन फ्रांसिस्को में लोगों को दफनाने की जगह कम पड़ गई, तो वहां मरने वालों को यहां दफनाया जाने लगा। वर्तमान समय में कोलमा की आबादी 1800 के आसपास है, जबकि 1.5 मिलियन लोगों की यहां कब्र मौजूद है। यही कारण है कि इसे 'सिटी ऑफ सोल' और 'सिटी ऑफ द साइलेंट' नाम से भी जाना जाता है।

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैंने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

विनोद कुमार शुक्ल

हिन्दी भाषा और नवाचार

डॉ. प्रदीप राज पी
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक,
मुख्यालय, कोच्ची

हिंदी, भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह शैक्षिक सामग्री और आधुनिक नवाचारों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रही है। तकनीक और वैश्वीकरण की प्रगति के साथ, हिंदी शैक्षिक प्लेटफॉर्म, शब्दकोश, विज्ञान और प्रोद्योगिकी पुस्तकों और नई शब्दावली को अपनाने में अपनी प्रासंगिकता साबित कर रही है। हिंदी के उत्थान के लिए समर्पित संगठन इस भाषा को पोषित करने और इसके दायरे को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

शैक्षिक सामग्री और डिजिटल प्लेटफॉर्म में हिंदी की भूमिका

हिंदी की भूमिका शिक्षा में हाल के वर्षों में काफी बढ़ी है, क्योंकि यह पारंपरिक और डिजिटल दोनों शिक्षण विधियों में अनुकूलित हो रही है:

1. स्कूल और कॉलेज की पाठ्य पुस्तकें: हिंदी भारत में स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा और परीक्षा का माध्यम बनी हुई है। इतिहास, सामाजिक विज्ञान, और यहाँ तक कि प्रारंभिक विज्ञान जैसे विषय हिंदी में छात्रों के लिए सुलभ बनाए जाते हैं।
2. शैक्षिक एप और डिजिटल शिक्षा:खान एकेडमी और डुओलिंगो जैसे प्लेटफॉर्म ने हिंदी में पाठ्यक्रम शुरू किए हैं, जिससे हिंदी बोलने वाले छात्रों के लिए शिक्षा अधिक समावेशी हो गई है। एनसीईआरटी द्वारा विकसित ई-पाठशाला जैसे एप डिजिटल पाठ्य पुस्तकों को हिंदी में उपलब्ध कराते हैं। व्हाइटहैट जूनियर जैसे कोडिंग प्लेटफॉर्म बच्चों के लिए हिंदी में प्रारंभिक स्तर की प्रोग्रामिंग कक्षाएँ प्रदान करते हैं।
3. यूट्यूब चैनल और पॉडकास्ट: हिंदी में गणित, भौतिकीया व्यक्तित्व विकास सिखाने वाले चैनल लाखों दर्शकों को आकर्षित करते हैं, जिससे छात्रों को हिन्दी में सीखने में मदद मिलती है।

हिन्दी शब्दकोश

हिंदी शब्दकोश, भौतिक और डिजिटल दोनों रूपों में, आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लगातार विकसित हो रहे हैं:

1. ऑनलाइन हिंदी शब्दकोश: शब्दकोश और रेख़्ता डिक्शनरी जैसे प्लेटफॉर्म हिंदी सीखने वालों के लिए उपकरणों के रूप में कार्य करते हैं, जिससे अर्थ, पर्यायवाची और उच्चारण समझने में मदद मिलती है।
2. मोबाइल एप के लिए शब्दकोश: हिंखोज हिंदी डिक्शनरी और गूगल ट्रांसलेट जैसे एप हिंदी शब्दावली और अनुवाद को आसानी से सुलभ बनाते हैं तथा द्विभाषी शिक्षा को समर्थन प्रदान करते हैं।

3. विशेषीकृत क्षेत्रों के लिए शब्दावलीः विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और कानून के लिए शब्दावली बनाने के सरकारी प्रयास शिक्षार्थियों और पेशेवरों को आवश्यक भाषाई उपकरण प्रदान करते हैं।

विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में हिंदी

हिंदी ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे अकादमिक और पेशेवर क्षेत्रों में काफी प्रगति की हैः

1. विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी हिंदी पुस्तकेंः एनसीईआरटी और अन्य शैक्षिक बोर्डों ने माध्यमिक और उच्च शिक्षा के लिए विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित की हैं। भौतिकी, जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान में उन्नत अवधारणाओं को शामिल करने वाली किताबें हिंदी में उपलब्ध हैं।
2. तकनीकी शब्दावलीः वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग (सी एस टी टी) जैसे संस्थान जटिल वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को हिंदी में अनूदित कर रहे हैं।
3. एआई और हिंदी एनएलपीः हिंदी में प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एन एल पी) उपकरणों का विकास हिंदी बोलने वालों और अत्याधुनिक तकनीकों के बीच की खाई को पाट रहा है।

नए शब्दावली

हिंदी की गतिशीलता उसकी अनुकूलनशीलता में निहित है। यह अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं से नए शब्दों को लगातार अपनाती रहती हैः

1. अंग्रेजी से हिंदीः 'कंप्यूटर', 'मॉड्यूल', और 'डिजिटल' जैसे शब्द हिंदी भाषा में आसानी से समाहित हो गए हैं।
2. भारतीय भाषाओं से हिंदीः 'शक्ति' (संस्कृत से) और 'कड़क' (पंजाबी से) जैसे शब्द हिंदी शब्दावली को समृद्ध करते हैं।
3. संकर शब्द और हिन्दी लिप्यांतरणः कई शब्दों को ध्वन्यात्मक रूप से शामिल किया गया है ताकि परिचितता बनी रहे, जैसे 'ऑपरेशन', 'नेटवर्क' आदि शब्द।

हिंदी को बढ़ावा देने वाले संगठन

हिंदी को बढ़ावा देने और इसके विकास के लिए कई संगठन सक्रिय रूप से काम कर रहे हैंः

1. केंद्रीय हिंदी निदेशालयः यह संगठन शैक्षिक कार्यक्रमों, शिक्षक प्रशिक्षण और छात्रवृत्तियों के माध्यम से हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देता है।
2. भारतीय अनुवाद परिषदः विश्व के साहित्यिक और वैज्ञानिक ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद को प्रोत्साहन देता है।
3. केंद्रीय हिंदी संस्थानः हिंदी शिक्षाशास्त्र में शोध करने और शिक्षकों को प्रशिक्षण देने पर ध्यान केंद्रित करता है।
4. हिंदी साहित्य सम्मेलनः हिंदी साहित्य को बढ़ावा देता है और हिंदी लेखकों और शोधकर्ताओं का समर्थन करने के लिए संगोष्ठी, कार्यशालाएँ और प्रकाशन आयोजित करता है।
5. राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (एन टी एम)ः पुस्तकें और ग्रंथ हिंदी में अनुवाद करने का कार्य करता है, जिससे आम जनता में ज्ञान प्राप्ति को सुनिश्चित किया जा सके।

हिंदी और प्रौद्योगिकी

तकनीकी प्रगति ने ऐसा युग शुरू किया है जहाँ भाषाएँ बाधा नहीं बल्कि सेतु बन गई हैं। हिंदी, अपनी ध्वनि संरचना और समृद्ध व्याकरण के साथ कम्प्यूटेशनल अनुप्रयोगों में विशेष रूप से अनुकूल है। नवाचारों ने हिंदी को निम्नलिखित तौर पर प्रभावित किए हैंः

1. नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एन एल पी)ः हिंदी अब एन एल पी नवाचारों में अग्रणी भूमिका निभा रही है। स्पीच-टू-टेक्स्ट और टेक्स्ट-टू-स्पीच सॉफ़्टवेयर जैसे टूल्स ने भाषा को व्यापक दर्शकों के लिए सुलभ बनाया है। स्मार्ट स्पीकर्स जैसे वर्चुअल असिस्टेंट अब हिंदी में समझ सकते हैं और प्रतिक्रिया दे सकते हैं, जिससे मूल वक्ताओं के लिए सहज बातचीत संभव हो गई है।
2. मशीन अनुवादः गूगल ट्रांसलेट जैसी पहल और क्षेत्रीय भाषाओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले भारतीय स्टार्टअप ने हिंदी को अन्य भाषाओं में और इसके विपरीत अनुवाद करना संभव बना दिया है। इसने सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित किया है और हिंदी की पहुंच विश्व भर में फैलाई है।
3. डिजिटल कंटेंट निर्माणः यूट्यूब, इंस्टाग्राम और ब्लॉगिंग साइट्स जैसे प्लेटफॉर्म हिंदी सामग्री से समृद्ध हैं, जिनमें शैक्षिक ट्यूटोरियल से लेकर मनोरंजन तक सब कुछ शामिल है। इंटरनेट की बढ़ती पहुँच के साथ हिंदी ने

डिजिटल प्लेटफार्मों पर एक महत्वपूर्ण उपस्थिति पाई है, जो प्रतिदिन लाखों उपयोगकर्ताओं को अपनी ओर खींच रही है।

4. मोबाइलः हिंदी-अनुकूल कीबोर्ड, प्रेडिक्टिव टेक्स्टऔर वॉयस इनपुट फीचर ने इसे स्मार्टफोन पर उपयोग में सरल बना दिया है। इन प्रगतियों ने यह सुनिश्चित किया है कि हिंदी वक्ता अंग्रेजी पर स्विच किए बिना डिजिटल रूप से संवाद कर सकें।
5. भाषिणीः एक सरकारी पहल जो भारत की भाषाई विविधता को जोड़ने के लिए नागरिकों की पसंदीदा भाषाओं, जिसमें हिंदी भी शामिल है, में तकनीक तक पहुंच प्रदान करती है।
6. ए आई 4भारतःआईआईटी मद्रास का एक अनुसंधान केंद्र जो हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में डिजिटल इंटरैक्शन को सुलभ बनाने के लिए एआई पर काम करता है।
7. सर्वम एआईः यह स्टार्टअप हिंदी और अन्य भाषाओं में आवाज-आधारित इंटरैक्शन पर केंद्रित है, जिससे आधार जैसी सेवाओं के लिए उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर बनाया जा सके।
8. राजभाषा विभाग आई टी उत्पादः हिंदी दिवस पर योजनाएं और आई टी उत्पाद लॉन्च किए जाते हैं ताकि हिंदी को आधिकारिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में बढ़ावा दिया जा सके। इसमें कंठस्थ 2.0 जैसे टूल्स शामिल हैं।

हिंदी और रचनात्मक अर्थव्यवस्था

नवाचार ने भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था में हिंदी की भूमिका को भी बढ़ावा दिया हैः

1. सिनेमा और ओटीटी प्लेटफार्मः मुख्य रूप से हिंदी पर केंद्रित बॉलीवुड एक वैश्विक घटना बन गया है। नेट फ्लिक्स और अमेज़न प्राइम जैसे ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म की शुरुआत के साथ, हिंदी फिल्में और सीरीज अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों तक पहुँच रही हैं तथा सांस्कृतिक और भाषाई बाधाओं को तोड़ रही हैं।
2. डिजिटल साहित्यः लेखक और कवि हिंदी में रचनाएं प्रकाशित करने के लिए ऑनलाइन फ्लैटफॉर्म का उपयोग कर रहे हैं तथा वैश्विक पाठकों से जुड़ रहे हैं। वेबसाइट और एप जैसे कुकू एफ एम, ऑडीबल,अमेज़न किंडल आदि हिंदी कहानी कहने के लिए प्लेटफार्म प्रदान करते हैं तथा पाठकों और लेखकों के डिजिटल समुदाय बनाते हैं।

निष्कर्ष

सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक विकास की सदियों पुरानी विरासत में निहित, हिंदी का सफर केवल ऐतिहासिक दायरे तक सीमित नहीं है। 21वीं सदी में, इस भाषा ने नवाचार को अपनाया है, जिससे यह तेजी से बदलती दुनिया में प्रासंगिक और बहुमुखी सिद्ध हो रही है। मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा जैसे साहित्यिक दिग्गजों की रचनाओं ने आधुनिक हिंदी साहित्य की नींव रखी, जो सामाजिक संरचनाओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी। आज के समय में हिंदी ने भौतिक सीमाओं को पार कर डिजिटल दुनिया में कदम रखा है। मोबाइल एप्लिकेशन से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक, यह भाषा नए मंचों पर स्थान बना रही है, जिससे इसकी पहुंच और वैश्विकता को बढ़ावा मिल रहा है।

शिक्षा, डिजिटल प्लेटफार्म और वैज्ञानिक विमर्श में हिंदी की बढ़ती उपस्थिति इसके आधुनिक भारत में महत्व को दर्शाती है। संस्थानों, शिक्षकों और तकनीकी विशेषज्ञों के सामूहिक प्रयास यह सुनिश्चित करते हैं कि हिंदी अपनी परंपरा और नवाचार को जोड़ते हुए जीवंत और अनुकूलनीय बनी रहे। डिजिटल हिंदी सामग्री को बढ़ावा देने और इसे अत्याधुनिक तकनीकों के साथ एकीकृत करने जैसे सरकारी पहलों ने इसके उपयोग को और प्रोत्साहित किया है। 'डिजिटल इंडिया' का दृष्टिकोण हिंदी की बढ़ती प्रमुखता के साथ पूरी तरह से मेल खाता है। यह सुनिश्चित करता है कि यह अतीत, वर्तमान और भविष्य की भाषा बनी रहे।

हिंदी अपनी साहित्यिक परंपरा की समृद्ध विरासत को प्रौद्योगिकी की संभावनाओं के साथ जोड़ते हुए एक गतिशील भाषा के रूप में स्थान बना रही है, जो संस्कृतियों को जोड़ती है, समुदायों को सशक्त बनाती है और प्रगति को अपनाती है। यह इस बात का प्रमाण है कि भाषाएँ अपनी जड़ों को खोए बिना कैसे विकसित हो सकती हैं और वैश्विक दुनिया में उनके महत्व की पुष्टि किस प्रकार करती हैं। नवाचार के इस युग में, हिंदी केवल जीवित नहीं है; यह फल-फूल रही है, जो परंपरा और तकनीक के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का प्रतीक है। इसकी प्राचीन लिपियों से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक की यात्रा अन्य भाषाओं के लिए प्रेरणा है। यह साबित करती है कि संवाद की शक्ति समय और माध्यम से परे है।

वक्त रुकता नहीं...

जिंदगी में कुछ पल यादगार होते हैं तो कुछ पल दर्द भरे, पर ऐसा भी एक पल हम सभी के जीवन में एक बार आता है जहां हम स्तब्ध रह जाते हैं- एक अविश्वसनीय पल। हमारे आस-पास की चीज़ें कितनी तेज़ी से बदल गई, यह सोचकर हम अक्सर चिंतित होते हैं। मगर समय के इस प्रवाह में हम खुद कहाँ पहुँच गए, यह पहुँचने के बाद ही हमे अक्सर एहसास होता है। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के ऐसे ही कुछ पलों को बटोरते हुए....

क्रम.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	श्रीमती तुलसी नायर	सहायक निदेशक (रा भा)	31.05.2024
2	श्रीमती मृणालिनी परेश आरेकर	वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक	31.05.2024
3	श्री सुदर्शनन नायर एम	मेसेंजर	31.05.2024
4	श्री रामपाल सिंह	ड्राइवर ग्रेड	31.07.2024
5	श्री दर्शन लाल धोंडीयाल	सहायक निदेशक (पंजीकरण)	31.01.2025
6	श्रीमती शेरली अरबी	कनिष्ठ अधीक्षक	31.03.2025
7	श्रीमती मीनाक्षी एम	सहायक	31.03.2025
8	श्री मंजप्पा एच	कनिष्ठ लिपिक	31.03.2025
9	श्री ए रविचंद्रन	कनिष्ठ लिपिक	31.03.2025

श्रीमती तुलसी नायर

श्रीमती मृणालिनी परेश आरेकर

श्री सुदर्शनन नायर एम

श्री रामपाल सिंह

श्री दर्शन लाल धोंडीयाल

श्रीमती शेरली अरबी

श्रीमती मीनाक्षी एम

श्री मंजप्पा एच

श्री ए रविचंद्रन

श्रद्धांजलि

Shri. K. Ramanjaneyulu, JTO (Aqua.)

वर्ष 2024-25 के दौरान समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के कर्मचारी के. रमनजनेयुलु, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (एक्वा) का 11 सितंबर 2024 को निधन हुआ। इनका जन्म 05 जून 1970 को हुआ था और इनके माता के कोंडम्मा और पिता के पपय्या थे। इन्होंने एक्वाकल्चर में स्नातकोत्तर तक पढ़ाई की तथा क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा में 19 अक्तूबर 2001 को फील्ड सूपरवाइज़र के रूप में एमपीईडीए परिवार का हिस्सा बनें। 22 साल और 11 महीने के इनके सेवाकाल के दौरान इन्होंने क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा, उप क्षेत्रीय प्रभाग, भीमावरम, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता जैसे कार्यालयों में सेवारत थे।

एक विचार

भारतीय संस्कृति ने हमें हमेशा अलग-अलग तरीकों से समृद्धि से भरा जीवन जीना सिखाया है। उसने यह भी सिखाया है कि हम किस तरह जीवन को बहत्तर तरीके से जिए, चाहे वह बृहदारण्यकोपनिषद् का मंत्र- "मृत्योर्मा अमृतं गमय" (मृत्यु से मुझे अमरता की ओर ले चलो) हो या यजुर्वेद की प्रार्थना- "पश्येमा शरदः शतदं, जीवेम शरदः शतदं" (मुझे 100 साल का शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ जीवन दें, जिसमें सभी भव्यता और आनंद हो)। भगवत गीता में जब भगवान श्री कृष्ण कहते हैं "देहिनो अस्मिन यथा देहे कुमारं यौवनं जरा तथा देहान्तर प्राप्तिही धीरसतात्र न मुह्यंति" (परिवर्तन अपरिहार्य है और हमें इस से डरना नहीं चाहिए), तो यह हमें जीवन के बारे में एक दर्शन प्रस्तुत करता है। भारत की संस्कृति अपने सार में मनुष्य और प्रकृति को समान महत्व देती है। यह हमें सामूहिकता, सद्भाव, मानव और प्रकृति सहित सभी के कल्याण, सहिष्णुता, सह-अस्तित्व और अंत में प्रेम के बारे में सिखाती है। क्या हमारी संस्कृति केवल अध्यात्मिकता से जुड़ी है, नहीं वह उससे कईं ज्यादा वैज्ञानिक एवं दार्शनिक है क्योंकि फ़ाहियान, ह्वेनत्सांग, प्लिनी और मेगस्थनीज के यात्रा वृतांतों में हम नालंदा और तक्षशिला के विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों को देखते हैं और आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर, नागार्जुन, चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट के रूप में हम दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और चिकित्सकों को देखते हैं।कबीर कहते हैं-गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय। बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविंद दियो बताय।। (जब गुरु और भगवान मेरे सामने खड़े हों, तो मुझे पहले किसके पैर छूने चाहिए, इस स्थिति में मैं पहले अपने शिक्षक के पैर छूऊँगा क्योंकि उन्होंने ही मुझे भगवान के पास पहुँचने का ज्ञान प्रदान किया है)। तेजस्विनावधीदमस्तु।

सिर्फ और सिर्फ मेरे लिए

श्रीमती रिजी आर के
वरिष्ठ लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची

"क्या तुम मेरे बारे में कुछ लिखोगी"
उसने अचानक कुछ ऐसा मांग लिया कि
एकाएक हतप्रभ होकर मैं
उसकी ओर देखने लगी
उसकी आँखों में एक कविता झलक आई
प्रेम से भरा
जो सिर्फ और सिर्फ मेरे लिए खिल रही थी
महक रही थी
वह मुझमें यूं भर आई कि
मेरे कलम नहीं रच पा रहे थे
उन अनकही बातों को जो मेरे लिए थी
हाँ, सिर्फ और सिर्फ मेरे लिए।
"इससे भी सुंदर मैं कैसे लिख पाऊँगी"
कहा मैं ने

अब नहीं बचा था कुछ उसके लिए
एक एहसास के सिवा
इस तरह मुझे छूकर निःशब्द
वह गुज़र गया, यूं हवा की तरह
बिना कुछ और पूछे।
तुम्हारे प्रेम की छुअन, वह कविता
तुम बस मेरे भीतर ही रह गए
जो बाकि रह गए
सिर्फ और सिर्फ मेरे लिए थी।

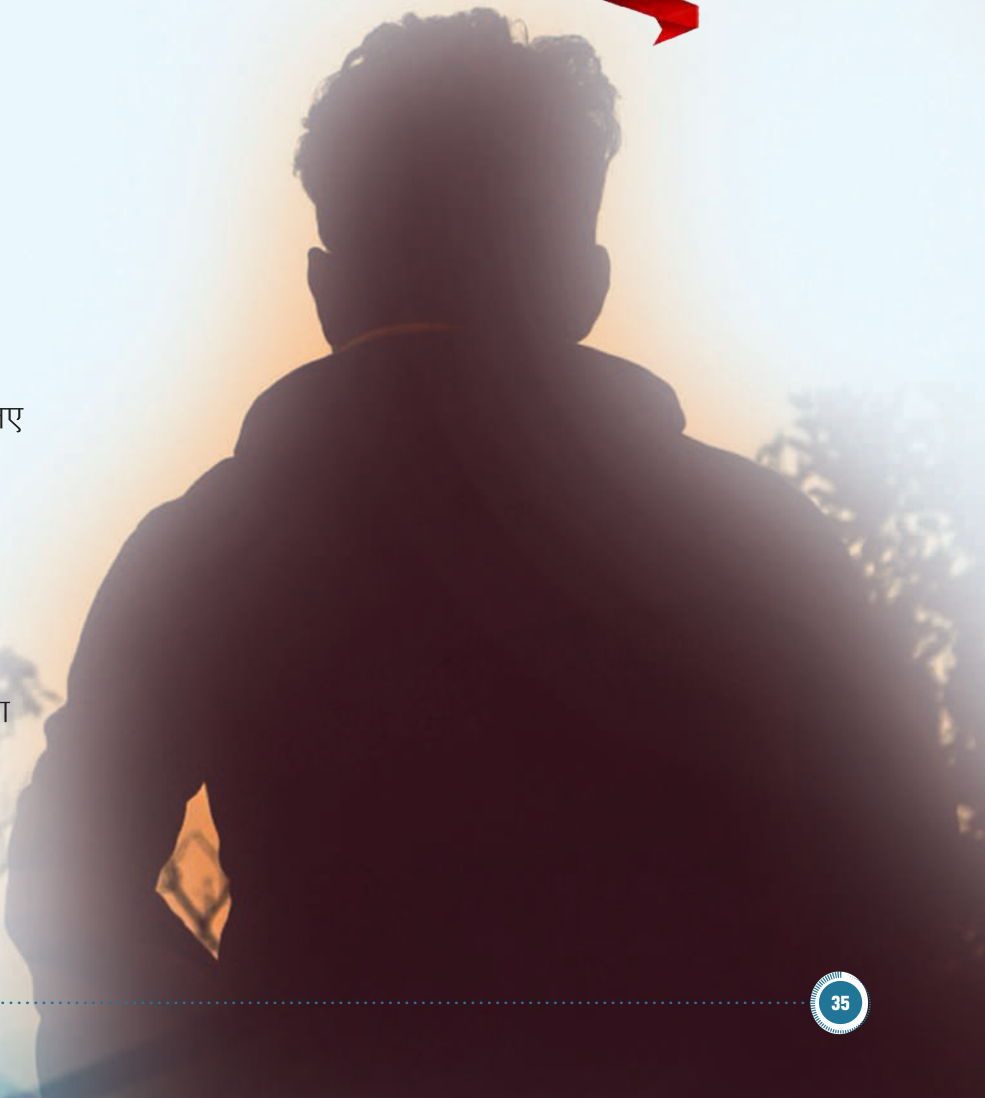

वक्त नहीं

जिन्दगी कितनी वयस्त हो गई है
कि अपने आप के लिए वक्त नहीं
हर खुशी है लोगों के दामन में,
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं
दिन रात दौडती दुनिया में,
जिन्दगी के लिए वक्त नहीं
माँ की लोरी का अहसास तो है,
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं,
सारे रिश्तों को हम मार चुके,
अब उन्हें दफनाने का वक्त नहीं
सारे नाम मोबाइल में है
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिए वक्त नहीं ,
आँखों में है नींद बडी,
पर सोने के लिए वक्त नहीं
दिल है गमों से भरा हुआ,
पर रोने के लिए वक्त नहीं
पैसे की दौड में ऐसे दौड़े
कि थकने के लिए वक्त नहीं
पराए अहसासों की क्या कदर करें,
जब अपने सपनों के लिए वक्त नहीं
दिल में बहुत बातें हैं बताने के लिए
लेकिन बताने के लिए वक्त नहीं।

शेर-ओ-शायरी

मेरे दिल की चाहत नहीं जानता क्या
तू मेरी है आदत नहीं जानता क्या
रुलाता है हर दिन मुझे क्यों तू इतना
तू आँसू की कीमत नहीं जानता क्या

जो मालिक है मेरा दयालु बहुत है
तू करना इबादत नहीं जानता क्या
सिखाता है क्यों तू नई पीढ़ियों को
बला है मोहब्बत नहीं जानता क्या
यूँ अनजान बनकर क्यों पूछता है
तू मेरी शिकायत नहीं जानता क्या

बिना बात की बातों पे क्यों भड़कना
हूँ करता शरारत नहीं जानता क्या

तेरे गम का ये सब तमाशा करेंगे
जमाने की फितरत नहीं जानता क्या

मेरे शेर पर तुम मुकर्रर न कहना है
नाजुक सी हालत नहीं जानता क्या

श्री के दिनेश,
सहायक, मुख्यालय, कोच्ची

हकीकत ज़िंदगी की

श्रीमती तुलसी नायर
सहायक निदेशक (रा भा)
(सेवानिवृत्त)

ज़िंदगी क्या है ....
एक ऐसा अनोखा सफर है
जो ले जाती हमें अनजान रास्तों पर है
ज़िंदगी की सच्चाई यही है
कि इसमें कुछ भी स्थायी नहीं है।

जीवन रूपी किताब के हर पन्ने पर,
लिखी जाती अनुभवों की दास्तान है।
हर पल एक नया अध्याय है,
कुछ कड़वी, कुछ मीठी
पर होती ये सभी बेमिसाल हैं।

समय की धारा में हम बहते जाते हैं,
कभी लगता है हम डूब रहे हैं,
तभी, कोई हाथ बढ़ाता है,
और हमें थाम लेता है।
वो हमारा खुदा बन जाता है,
और दे जाता है कुछ ऐसा तोहफा,
जो हमारी कल्पना से भी परे होता है।

ज़िंदगी रूपी गाड़ी
न कभी रुकती है,
न ही इसमें रिवर्स गियर होता है,
राह में आते हरेक पल को
सँजोते हुए
बस आगे ही बढ़ते जाना है।

सपनों को साकार करने की धुन में
सब दौड़े ही जा रहे हैं,
पर हकीकत यह है कि,
खाली हाथ आए हैं हम,
और खाली हाथ ही जाना है।
जिंदगी एक माया है
न कोई अपना, न ही पराया है।
जिंदगी की इस हकीकत से रूबरू होना हो
तो उन रास्तों पर लौट कर देखना,
जहाँ कभी तुम्हारे कदम पड़े थे।
उन गावों और शहरों में जाना,
जिन्हें तुमने कभी अपना माना था।

अपने पुराने कर्म स्थल पर जाना
पर यह देख हरगिज उदास मत होना
कि उस कुर्सी पर कोई और बैठा है
जिस पर कभी तुम बैठा करते थे,
कमरे के बाहर किसी और का नाम लिखा है,
जिसपर कभी तुम्हारा नाम हुआ करता था
और जहां कभी तुम्हारी हुकूमत चला करती थी,
वहाँ अब कोई तुम्हें पहचानने वाला भी नहीं है।

समय की यही चाल है,
जो आज तुम्हारा है,
कल किसी और का होगा।
छाया है जो साथ तेरे,
वो भी एक दिन खो जाएगा।
आज हम हैं तो कल तुम हो,
कहाँ किसको ठहरना है।
यही हक़ीक़त है,
यही दुनिया का दस्तूर है।
जितनी जल्दी समझ सको,
उतनी जल्दी मिलेगा सुकून।

जीवन के आखिरी पड़ाव में,
न दौलत साथ चलती है,
न शोहरत की परछाई,
बस वे पल, जो जिए थे दिल से,
बन जाते हैं यादों की रौशनी।

सर्दी

मैं सर्दी कहलाती हूं
जवान, बच्चे, बूढे सभी को सताती,
पर उन्हें गर्म कपडे पहनाती हूं
जब गर्मी का मौसम आता,
फिर यही सब उतरवाती हूं
मैं सर्दी कहलाती हूं ....

अचानक बारिश होने से,
ज्यादा ठंडा महसूस होता है,
सब को कहती मोटे कपडे पहनो,
जिसे गर्मी का अहसास होता है
मैं सर्दी कहलाती हूं ....

लोग सुबह उठकर पानी गर्म करते हैं
और फिर गर्म पानी से स्नान करते हैं
यदि रात को सोते समय ठंड लगती है
उन्हें हीटर चलाने का परामर्श देती हूं
मैं सर्दी कहलाती हूं ....

वास्तव में मैं छोटे बच्चों का लिहाज करती हूं
लेकिन बूढों को सचमुच ज्यादा ही लगती हूं
यह मेरे वश में कतई नहीं है
फिर भी इसका इजहार करती हूं
मैं सर्दी कहलाती हूं ....

मन से सभी को बच्चों सा उपाय बताती हूं
परंतु घर से बाहर न जाने की सलाह भी देती हूं
यदि कोई मेरी एक भी नहीं सुनता
तो स्वयं ही उसका कारण बन जाती हूं
मैं सर्दी कहलाती हूं ....

श्री दर्शन लाल धोंडीयाल
सहायक निदेशक (सेवानिवृत)

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2024-25

14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा बनाने का फैसला लिया। इस दिन के महत्व को दर्शाने के लिए तथा आने वाले पीढ़ियों को शिक्षित करने के उद्देश्य से हर साल 14 सितंबर को सभी भारतीय हिन्दी दिवस मनाते हैं। हिन्दी केंद्र सरकार की राजभाषा ही नहीं बल्कि भारत जैसे बहुभाषी देश को एकजुट बनाए रखने के लिए एक संपर्क भाषा के रूप में भी कार्य करता है। हिन्दी के महत्व को ध्यान में रखते हुए तथा राजभाषा नीति के अनुसरण में समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण 18 से 30 सितंबर 2024 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें एमपीईडीए के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं हैंः- हिन्दी टंकण, टिप्पण एवं आलेखन, आज का शब्द, कविता पाठ, हिन्दी गीत, हिन्दी अनुवाद और हिन्दी लघु कहानी।

हिन्दी पखवाडा समारोह -2024
(दिनांक 18 सितंबर 2024 से 30 सितंबर 2024 तक)
हिन्दी प्रतियोगिता का परिणाम

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (18.09.2024)

1.श्रीमती नीनू पीटर, उप निदेशक-(प्रथम)

2. श्रीमती आशिता खलील, वरिष्ठ लिपिक- (द्वितीय)

3. श्रीमती सुमनामोल.पी.एस, वरिष्ठ आशुलिपिक- (तृतीय)

आज का शब्द/वाक्य प्रतियोगिता (23.09.2024)

1. श्रीमती गिधु मोहन, वरिष्ठि लिपिक- (प्रथम)

2. सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठि लिपिक- (द्वितीय)

3. श्रीमती षैमामोल.के.पी, कनिष्ठ लिपिक- (तृतीय)

हिन्दी काव्य पाठ प्रतियोगिता (25.09.2024)

1. श्री दिनेश.के, सहायक- (प्रथम)

2. श्रीमती चित्रा.जे.आर, वरिष्ठ लिपिक- (द्वितीय)

3. श्रीमती गिधु मोहन, वरिष्ठि लिपिक- (तृतीय)

हिन्दी लघु कहानी प्रतियोगिता (27.09.2024)

1. सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक- (प्रथम)

2. डॉ बिजी.के.बी, तकनीकी अधिकारी- (द्वितीय)

3. डॉ गणेश.के, सहायक निदेशक- (तृतीय)

टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता (20.09.2024)

1. डॉ बिजी.के.बी, तकनीकी अधिकारी- (प्रथम)

2. श्रीमती एलिज़बेथ फास्मिता टिन्टू, व.आशुलिपिक- (द्वितीय)

3. श्रीमती सुमनामोल.पी.एस, वरिष्ठ आशुलिपिक- (तृतीय)

हिन्दी गीत प्रतियोगिता (25.09.2024)

1. सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक- (प्रथम)

2. डॉ राम मोहन.एम.के, संयुक्त निदेशक (गु.नि)- (द्वितीय)

3. श्री ए.जी.अल्फ्रेड, तकनीकी सहायक- (तृतीय)

हिन्दी गीत प्रतियोगिता (वाई पी एवं प्रशिक्षुओं के लिए)

1. सुश्री आतिरा मोहन,प्रशिक्षु- (प्रथम)

2. श्री नितिन जेकब, वाइ पी- (द्वितीय)

3. सुश्री जोस्लिन मरिया जोस, प्रशिक्षु- (तृतीय)

हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता (27.09.2024)

1. डॉ राम मोहन.एम.के, संयुक्ती निदेशक (गु.नि)- (प्रथम)

2. डॉ बिजी.के.बी, तकनीकी अधिकारी- (द्वितीय)

3. सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक- (तृतीय)

हिन्दी पखवाडा समारोह के विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पुरस्कार प्राप्त कार्मिक -सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक तथा सर्वाधिक पुरस्कार प्राप्त अनुभाग - गुणवत्ता नियंत्रण अनुभाग रहा। प्राधिकरण में आधिकारियों/ कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों के लिए एमपीईडीए की गृह पत्रिका सागरिका के लिए कवर पेज

डिज़ाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसका विषय राजभाषा हिन्दी और भारत के त्योहार था।

सागरीका कवर पेज प्रतियोगिता

1. सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक (राजभाषा हिन्दी)
2. श्री अक्षय, वाइ पी, गु.नि अनुभाग (भारत के त्योहार)
3. डॉ राम मोहन.एम.के, संयुक्त निदेशक (गु.नि)- प्रोत्साहन
4. श्रीमती शीतल.पी.एस,कनिष्ठ लिपिक राजभाषा अनुभाग- प्रोत्साहन
5. श्री तांबड़ा नरेश विष्णु, उप निदेशक, क्षे प्र, नागपट्टिनम- प्रोत्साहन
6. श्री सुनील पीराउत, व. लिपिक, क्षे प्र, बी बी एस आर- प्रोत्साहन

हिन्दी पखवाडा समारोह में सहभागिता के लिये विशेष पुरस्कार भी दिए गए:-

1. श्रीमती अखिला जे., कनिष्ठ आशुलिपिक
2. श्रीमती वीणा के.पी., वरिष्ठ लेखाकार
3. श्रीमती शिबी मोहनन, वरिष्ठ लिपिक
4. श्रीमती नीथू हुसैन, कनिष्ठ अधीक्षक
5. श्रीमती बिबी वी.सी., तकनीकी अधिकारी
6. श्रीमती स्मिता वी.जी., वरिष्ठ लिपिक

राजभाषा समागम

एमपीईडीए द्वारा दिनांक 19 दिसंबर 2024 को राजभाषा समागम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा समारोह के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयताओं को एमपीईडीए के अध्यक्ष महोदय श्री डी वी स्वामी, भा प्र से के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए। हिन्दी पखवाडा समारोह के विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पुरस्कार प्राप्त कार्मिक - सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक तथा सर्वाधिक पुरस्कार प्राप्त अनुभाग - गुणवत्ता नियंत्रण अनुभाग को राजभाषा ट्रॉफी दिया गया।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिता के विजेता एमपीईडीए के अध्यक्ष महोदय श्री डी वी स्वामी भा प्र से, से पुरस्कार प्राप्त करते हुए

राजभाषा समागम 2024 के दौरान सभा को संबोधित करते हुए एमपीईडीए के अध्यक्ष महोदय श्री डी वी स्वामी, भा प्र से

राजभाषा समागम 2024 के दौरान सभा को संबोधित करते हुए एमपीईडीए के निदेशक डॉ. कार्तिकेयन एम

राजभाषा समागम 2024 के दौरान सभा को संबोधित करते हुए एमपीईडीए के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्रीमती अंजु, सहायक निदेशक

हिन्दी पखवाडा समारोह के विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पुरस्कार प्राप्त कार्मिक - सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठि लिपिक

हिन्दी पखवाडा समारोह के विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पुरस्कार प्राप्त अनुभाग - गुणवत्ता नियंत्रण अनुभाग

प्रतियोगिता में विजयी अन्य कार्मिक

कवर पेज प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा 2024 के प्रतियोगिताओं को और अधिक रोचक एवं समकालीन प्रौद्योगिकी के सृजनात्मक पहलू के समन्वेषण के तहत हिन्दी गृह पत्रिका सागरिका के लिए कवर पेज डिजाइन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कवर पेज डिजाइन के दो थीम थे- "राजभाषा हिन्दी" तथा "भारत के त्योहार"। इस प्रतियोगिता में कुल 07 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कवर पेज के मूल्यांकन के लिए दो बाहरी निर्णायकों का भी एमपीईडीए द्वारा चयन किया गया। मूल्यांकन के परिणामस्वरूप दोनों थीमों के लिए दो विजयताओं का चयन किया गया तथा उन्हें नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रतिभागी एवं कवर पेज जिन्हें पुरस्कार प्राप्त हुआ:-

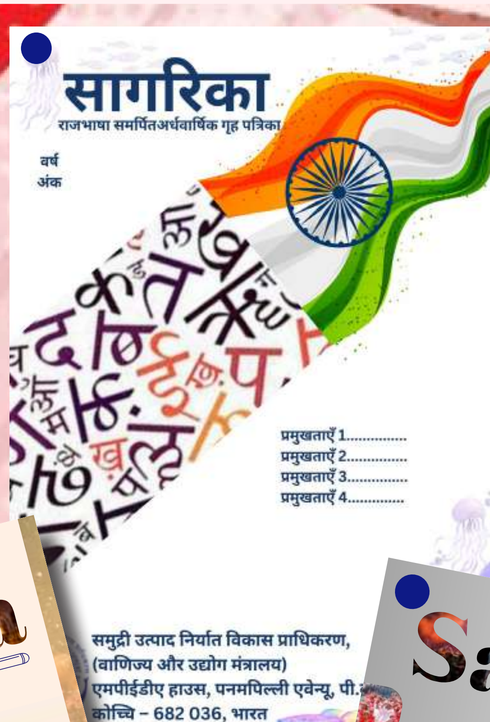

सुश्री सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक

श्री अक्षय, वाइ पी, गु.नि अनुभाग

एमपीईडीए, क्षेत्रीय/ उप क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी दिवस समारोह 2024 का आयोजन

उप क्षेत्रीय प्रभाग, वलसाड

उप क्षेत्रीय प्रभाग, वलसाड में 18.09.2024 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। श्रीमती दर्शना एम. कनाडा, हिन्दी शिक्षिका, बाई अवाबाई हाईस्कूल, वलसाड को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया, जिन्होंने हिन्दी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी कर्मचारियों को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए हार्दिक बधाई दी। श्री नामदेव आर. भोइंकर, तकनीकी सहायक ने उपस्थित सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को दैनिक गतिविधियों में हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अधिकतम प्रयास करने का अनुरोध किया। इस उपलक्ष्य में हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं पुरस्कार वितरण भी किया गया।

उप क्षेत्रीय प्रभाग, गुवाहाटी

उप क्षेत्रीय प्रभाग, गुवाहाटी में 18 सितंबर, 2024 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यालय में हिन्दी दिवस का बैनर लगाया गया।

उप क्षेत्रीय प्रभाग, तूतीकोरिन

उप क्षेत्रीय प्रभाग, तूतीकोरिन में 18 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्रीमती एस कृष्णवेणी, हिंदी पंडित, तूतीकोरिन को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया और उन्होंने राजभाषा के महत्व के बारे में बताया। इस अवसर पर हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा पुरस्कार वितरित किए गए। श्री एस अरूलराज, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने सभी कर्मचारियों को अपना काम हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया।

उप क्षेत्रीय प्रभाग/ गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, पोरबंदर

राजभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से 18.09.2024 को उप क्षेत्रीय प्रभाग / गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, पोरबंदर द्वारा संयुक्त रूप से हिंदी दिवस 2024 मनाया गया। श्री श्रीमाली विनोदकुमार एम. उप निदेशक ने हिंदी के महत्व पर संक्षिप्त भाषण दिया। इस अवसर पर हिंदी लेखन, हिंदी/अंग्रेजी अनुवाद जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

उप क्षेत्रीय प्रभाग, नागपट्टिनम

आधिकारिक कामकाज में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने और जागरूकता पैदा करने के लिए, उप क्षेत्रीय प्रभाग, नागपट्टिनम में 27.09.2024 को हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। श्री नरेश विष्णु तांबडा, उप निदेशक ने मुख्य अतिथि श्री आशीष कुमार, सीमा शुल्क निरीक्षक हिंदी अधिकारी,सीमा शुल्क उप/सहायक आयुक्त, सीमा शुल्क प्रभाग, नागपट्टिनम का स्वागत किया। श्री आशीष कुमार ने हिंदी सीखने के महत्व पर संक्षिप्त जानकारी दी और कर्मचारियों को कई हिंदी शब्द सिखाए, जिनका उपयोग आधिकारिक कार्यों में किया जाता है। इस अवसर पर हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा पुरस्कार भी वितरित किए गए।

क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई

क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई में 27 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस समारोह 2024 का आयोजन किया गया। डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार, उप निदेशक ने उपस्थित सभी अधिकारी/कर्मचारियों को 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाने का उद्देश बताया और हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अधिकतम प्रयास करने का अनुरोध किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री. जितेंद्र कामरा, सहायक निदेशक (राजभाषा), भारतीय भूचुम्बकत्व संस्थान, कलम्बोली हायवे, न्यू पनवेल, नवी मुंबई को आमंत्रित किया गया। हिंदी दिवस के सिलसिले में श्रुतलेख और पठन जैसे प्रतियोगिताओं का आयोजन किया और प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए।

क्षेत्रीय प्रभाग, चेन्नई

क्षेत्रीय प्रभाग, चेन्नई में 30.09.2024 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जयश्री तिलक, प्रभारी हिंदी अधिकारी और वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि ने राजभाषा कार्यान्वयन पर विस्तृत व्याख्यान दिया और अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए एक प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया। इस अवसर पर हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई और कार्यक्रम के अंत में विजयताओं को नकद पुरस्कार वितरित किए गए।

प्रकृति की यात्रा

श्रीमती स्मिता वी जी, वरिष्ठ लिपिक,
मुख्यालय, कोच्ची

हम लगभग 6:00 बजे मामलकंडम की अपनी यात्रा पर निकले। यह आकर्षक गांव एर्नाकुलम जिले के कोतमंगलम तालुक से लगभग 32 किलोमीटर दूर स्थित है। उस दिन मौसम काफी बारिश वाला था और हम लगभग 32 एमपीईडीए सदस्यों का एक समूह था। हमारे परिवहन का साधन 'रॉयल' नामक बस थी और कुछ व्यक्ति अन्य स्थानों से बस में आ रहे थे।

बस के अंदर संगीत बज रहा था और माहौल उत्साह से भर गया था क्योंकि हर कोई ताली बजा रहा था और यात्रा का आनंद ले रहा था। हमारा मार्ग हमें आलुवा पेरुंबावूर मार्ग से ले गया और किसी ने अंतर्राज्य प्रवासी श्रमिकों की मेजबानी के लिए पेरुंबावूर की प्रतिष्ठा के कारण पश्चिम बंगाल पहुंचने के बारे में एक मजा किया टिप्पणी की।

सुबह लगभग 8:15 बजे, हम नेरियमंगलम पहुंचे, और भूख लगने लगी। बस ने कुट्टमपुझा मार्ग नहीं लिया, क्योंकि यह भारी वाहनों के लिए चुनौतीपूर्ण माना जाता था। हम नाश्ते के लिए रुके, और हर कोई अपने हाथ धोने और सांस लेने के लिए उतर गया। बारिश का मौसम बना रहा और हमने मौके का फायदा उठाते हुए तस्वीरें खींचीं और सेल्फी लीं। केएसआरटीसी की बसें और अन्य वाहन वहां से गुजरे और हमने बस में ही परोसे गए अप्पम और स्टू के स्वादिष्ट नाश्ते का आनंद लिया।

हालाँकि, हमारा आनंद तब बाधित हो गया जब हमने जमीन पर जोंकों की उपस्थिति देखी, जिससे सभी को

जल्दी से बस में लौटने के लिए प्रेरित होना पड़ा।

अपनी यात्रा के दौरान हम नेरियमंगलम स्थित नवोदय विद्यालय के पास से गुजरे। इस रूट पर श्रीजीत सर और मंजूषा ने अपने अनुभव साझा किए.

जैसे ही हम आगे बढ़े, बस हमें मामलकंडम में सरकारी स्कूल के पास ले आई। यह क्षेत्र एर्नाकुलम जिले की हलचल से बिल्कुल अलग है और शांति का एहसास कराता है। ममलक्कंदम सरकारी स्कूल अपने आप में हरे-भरे पहाड़ों की पृष्ठभूमि पर स्थित है और अपने सफेद रंग से रंगे हुए मुखौटे के साथ केरल में एक अनोखा दृश्य है, जिसे मामलकंडम सरकारी हाई स्कूल के रूप में जाना जाता है। हमने कक्षा की खिड़कियों से बाहर लुभावने पहाड़ों और सफेद झरनों को देखा। जो चीज़ वास्तव में इस स्कूल को अलग करती है, वह है इसके आसपास की प्राकृतिक सुंदरता, एक ऐसी विशेषता जिसका मुकाबला केरल का कोई अन्य स्कूल नहीं कर सकता। उरुल्लीकुझी झरनों की ओर बढ़ने से पहले हमने पहाड़ी घाटी की सुंदरता की सराहना करने के लिए एक संक्षिप्त क्षण लिया।

जब हम बस से उतरे तो बारिश नहीं हो रही थी. परिणामस्वरूप, हममें से केवल कुछ ही लोग रेनकोट और छाते लेकर आये। हालाँकि, जैसे ही हम झरने पर पहुँचे, बारिश शुरू हो गई। स्थानीय निवासियों ने हमें बताया कि बारिश को देखते हुए दोपहर के भोजन के बाद झरने में स्न-ाान करना बेहतर होगा। हवा में अनिश्चितता छा गई और हर कोई वहां खड़े होकर झिझक रहा था। उस समय,अइविन के बच्चे साहसपूर्वक झरने में चले गए, और धीरे-धीरे, हममें से बाकी लोग भी उनका अनुसरण करने लगे।

झरने पर हमारा समय बिल्कुल आनंदमय था, क्योंकि हम ताज़गी भरे पानी में तैर रहे थे। झरना और उसका प्राकृतिक परिवेश अविश्वसनीय रूप से सुंदर था, जिसमें पानी का प्रवाह काफी तेज़ था। हालाँकि, भारी बारिश के कारण स्थानीय लोगों ने हमें झरना छोड़ने की सलाह दी, क्योंकि जलधारा नहाने के लिए असुरक्षित हो गई थी। अनिच्छा से, हम सभी सूखी भूमि पर वापस जाने लगे।

हमारी यात्रा जारी रही, और अंततः हम उस घर पर पहुँचे जहाँ हमारे दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई थी। जब हम पहुंचे तो दूसरा समूह पहले से ही अपने भोजन का आनंद ले रहा था, इसलिए हमने धैर्यपूर्वक अपनी बारी का इंतजार किया। यह कोई आम रेस्टोरेंट नहीं बल्कि एक चट्टान पर स्थित घर था। एक बार जब पहला समूह चला गया, तो हम अपना भोजन करने के लिए आगे बढ़े। यह एक स्व-सेवा सेटअप था, जिसमें एक महिला और दो सज्जन हमें शाकाहारी और मांसाहारी दोनों व्यंजन परोसते थे। आस-पास का वातावरण बिल्कुल साफ-सुथरा और अच्छी तरह से बनाए रखा गया था, घर के चारों ओर काली मिर्च के पौधे उगाए गए थे, जो जगह के समग्र आकर्षण को बढ़ाते थे।

महिला ने हमें बताया कि वह एक स्कूल में रसोइया का काम करती है. उन्होंने आने वाले पर्यटकों से मिले ऑर्डर के मुताबिक खाना तैयार किया. दोपहर के भोजन के बाद, हमने स्थानीय निवासियों से क्षेत्र में घूमने योग्य स्थानों के बारे में पूछताछ की। उन्होंने हमारे लिए कोनियाप्पारा और मुनिप्पारा घूमने के लिए एक जीप सफारी की व्यवस्था करने की पेशकश की, जिसके लिए उन्होंने रु. 2000 प्रति जीप। हमने चार जीपें किराए पर लीं, और यह अच्छी थी क्योंकि उनके नाम भैरवन और कडुवा जैसे दिलचस्प थे। यह आश्चर्यजनक था जब एक जीप तेजी से एक बहुत ही खड़ी चट्टानी पहाड़ी पर चढ़ गई।

हमारी जीप सफारी साहसिक यात्रा कोनियाप्पारा की यात्रा से शुरू हुई। जीप सफारी के साथ यह मेरा पहला अनुभव था, और यह अविश्वसनीय रूप से रोमांचक, रोमांचकारी और साहसिक था। जीप चट्टानी इलाके से होकर पहाड़ियों पर चढ़ गई। हमारी जीप का ड्राइवर, जिसका नाम अप्पू है, एक स्पष्ट पथ के अभाव के बावजूद उल्लेखनीय रूप से शांत बना रहा। कई बार रास्ता साफ करने के लिए ड्राइवरों को जीप से बाहर भी निकलना पड़ा। हमने चट्टानों के ऊपर से बहते पानी को पार किया और अप्पू ने हमें मजबूती से पकड़ने का आग्रह किया और वह तेजी से जीप को खड़ी, पथरीली ढलानों पर ले गया। एक समतल क्षेत्र में पहुँचकर, सभी जीपें रुक गईं और हम पहाड़ों की सुंदरता की सराहना करने के लिए उतर गए। बरसात के दिन के बावजूद, हमें गर्मी महसूस हुई। वहाँ एक विक्रेता विभिन्न स्नैक्स और कैंडी बेच रहा था। कुछ तस्वीरें लेने के

बाद, हमने पहाड़ी के शिखर की ओर अपनी यात्रा फिर से शुरू की। बाहरी परिवेश में डूबी एक ऑफ-रोड जीप सफारी वास्तव में एक असाधारण अनुभव थी।

आखिरकार, हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, जहाँ तेज़ हवाओं ने हमें घेर लिया था, और सफ़ेद धुंध ने क्षेत्र को घेर लिया था। ऐसा लगा जैसे यह एक शांत और शांतिपूर्ण जगह है। सुखदायक हवा के साथ मिलकर बेजोड़ प्राकृतिक सुंदरता ने शांति का एहसास प्रदान किया। मुझे लगता है कि, 'क्या आप स्वर्ग में आ गए हैं? सपना भगवान की रचना में पीले और नीले रंग के समान उज्ज्वल था, और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं सचमुच स्वर्ग में शामिल हो गया हूं। हम सभी वहां बैठे, बारिश के बादलों को इकट्ठा होते देख रहे थे, और कोई बारिश की भविष्यवाणी की गई थी, इसलिए हमने कोनियाप्पारा से लौटने का फैसला किया। हमें यह लगा कि केवल कुछ ही लोग मामलकंडम की सुंदरता के बारे में जानते थे।

इसके बाद, हम मुनिप्पारा की ओर चल पड़े। मामलकंडम हाई स्कूल के पीछे मुनिप्पारा माला पहाड़ी दिखाई दे रही थी, और बारिश हो रही थी। हम सभी ने प्रकृति की सुंदरता का आनंद उठाया।

लगभग 5 बजे तक हम वहीं लौट आये जहाँ हमारी बस खड़ी थी। पास की एक दुकान पर हम सभी ने कॉफ़ी और ऑमलेट का आनंद लिया। बस में, हर कोई संगीत पर नाच रहा था, और हास्य के क्षण भी थे।

मामलकंडम से हमारी वापसी यात्रा लगभग 9:30 बजे पनमपिल्ली नगर में समाप्त हुई। यह हम सभी के लिए वास्तव में एक यादगार और यादगार अनुभव था।

प्रेरणा और उत्साह प्रदान करने वाले सफलता के बारे में 10 वाक्यांश

श्री जियो क्रिस्टी ईपेन
कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी
मुख्यालय, कोच्ची

1. सफलता अंतिम नहीं है; असफलता घातक नहीं है - यह जारी रखने का साहस है जो मायने रखता है।
2. जब प्रतिभा कड़ी मेहनत नहीं करती है तो कड़ी मेहनत प्रतिभा को हरा देती है।
3. सफलता का मार्ग हमेशा निर्माणाधीन होता है।
4. बड़े सपने देखें, कड़ी मेहनत करें, ध्यान केंद्रित रखें और अपने आप को अच्छे लोगों से घेरे रखें।
5. सफलता आपके पास नहीं आती है; आप उसके पास जाते हैं।
6. असफलता बस फिर से शुरू करने का अवसर है, इस बार अधिक समझदारी से।
7. सफलता दिन-प्रतिदिन दोहराए जाने वाले छोटे-छोटे प्रयासों का योग है।
8. खुदपर और आप जो हैं उस पर विश्वास रखें। जानें कि आपके अंदर कुछ ऐसा है जो किसी भी बाधा से बड़ा है।
9. सफलता बिना उत्साह खोए असफलता से असफलता की ओर लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ना है।
10. कल के हमारे अहसास की एकमात्र सीमा आज के हमारे संदेह होंगे।

चिंजु आर
(पत्नी) डॉ. प्रदीप राज पी
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

साइबर अपराधः डिजिटल युग में बढ़ता खतरा

आज के परस्पर जुड़े हुए विश्व में, डिजिटल स्थान हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है, जो अभूतपूर्व सुविधाएँ और पहुँच प्रदान करता है। हालाँकि, इसकी अच्छाइयों के साथ-साथ, साइबर अपराध का बढ़ता खतरा व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकारों के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। साइबर अपराध में उन कानून विरूद्ध गतिविधियों को शामिल किया जाता है जो डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से की जाती हैं, जैसे पहचान की चोरी, हैकिंग, रैनसमवेयर हमले और फिशिंग घोटाले।

साइबर अपराध का सबसे चिंताजनक पहलू इसका व्यापक प्रभाव है। अपराधी कंप्यूटर सिस्टम और नेटवर्क में मौजूद कमजोरियों का फायदा उठाते हैं ताकि संवेदनशील डेटा चोरी कर सकें, सेवाओं को बाधित कर सकें, या वित्तीय नुकसान पहुँचा सकें। व्यक्तियों के लिए, इसका परिणाम अक्सर व्यक्तिगत जानकारी की चोरी, जैसे क्रेडिट कार्ड विवरण या सोशल मीडिया खातों की चोरी के रूप में होता है, जिससे पहचान की चोरी होती है। संगठनों के लिए, साइबर हमले संचालन को बाधित कर सकते हैं, बौद्धिक संपदा को खतरे में डाल सकते हैं, और प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

आम जनता द्वारा सामना किए जाने वाले सामान्य साइबर अपराध

साइबर अपराध के कारण आम जनता को अपने दैनिक ऑनलाइन संवादों में कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ता है। ये खतरे वित्तीय, भावनात्मक और व्यक्तिगत स्तर पर गंभीर प्रभाव डाल सकते हैं। नीचे कुछ मुख्य साइबर अपराधों की विस्तृत जानकारी दी गई हैः

फिशिंग हमलेः धोखाधड़ी वाले ईमेल, संदेश या वेबसाइट से उपयोगकर्ताओं को संवेदनशील जानकारी साझा करने के लिए मूर्ख बनाते हैं। उदाहरणः उपयोगकर्ताओं को भरोसेमंद संस्थानों जैसे बैंक या ई-कॉमर्स साइट्स से ईमेल प्राप्त होते हैं। नकली लिंक उन्हें नकली वेबसाइटों पर ले जाते हैं जो उनके लॉगिन क्रेडेंशियल्स को संग्रहित करते हैं।

रैनसमवेयर: यह एक प्रकार का मालवेयर है जो व्यक्तियों को उनके उपकरणों या डेटा तक पहुंचाकर उनका डाटा चुराया जाता है, फिर उससे फिरौती की मांग की जाती है। उदाहरण:साइबर अपराधी व्यक्तिगत तस्वीरों, महत्वपूर्ण दस्तावेजों, या घरेलू कार्यालय प्रणालियों को निशाना बनाते हैं। साइबर अपराधी पीड़ितों को क्रिप्टोकरेंसी में भुगतान करने के लिए मजबूर करते हैं।

पहचान की चोरी: अपराधी व्यक्तिगत जानकारी, जैसे आधार, पैन कार्ड, या ड्राइविंग लाइसेंस विवरण चोरी करते हैं और इसका उपयोग धोखाधड़ी करने के लिए करते हैं। सामान्य परिणामः अवैध वित्तीय लेनदेन। पीड़ित के नाम पर नकली खातों का खुलना, जिससे क्रेडिट समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

वित्तीय धोखाधड़ी: नकली लॉटरी घोषणाएँ जो पीड़ितों को बैंक विवरण साझा करने के लिए मजबूर करती हैं, या ओटीपी (वन-टाइम पासवर्ड) मांगने वाले कॉल।

सोशल मीडिया घोटाले: साइबर अपराधी चोरी किए गए तस्वीरों से नकली प्रोफ़ाइल बनाते हैं या रोमांस घोटालों को अंजाम देते हैं, जहाँ पीड़ितों को भावनात्मक रूप से तोड़कर उनसे धन लिया जाता है।

साइबर बुल्लियिंग और उत्पीड़न: सोशल प्लेटफार्मों पर गुमनाम रूप से उत्पीड़न या दुर्व्यवहार किया जाता है, जिससे पीड़ितों को मनोवैज्ञानिक तनाव और सार्वजनिक अपमान का सामना करना पड़ता है।

मालवेयर हमले: उपयोगकर्ता अनजाने में मालवेयर डाउनलोड कर सकते हैं, जैसे कि स्पाइवेयर जो ऑनलाइन गतिविधियों को ट्रैक करता है या हानिकारक वायरस जो उपकरणों को संक्रमित करता है।

डेटा उल्लंघन: कंपनी वेबसाइटों से लीक डेटा जैसे ईमेल पता, पासवर्ड, और वित्तीय जानकारी अक्सर डार्क वेब पर बेचा जाता है।

नकली ऐप्स और डाउनलोड: नकली ऐप्स जो वैध दिखते हैं, अक्सर उपयोगकर्ताओं को मालवेयर इंस्टॉल करने के लिए धोखा देते हैं।

ऑनलाइन शॉपिंग घोटाले: नकली ई-कॉमर्स वेबसाइटें अक्सर ऐसे ऑफर देती हैं जो 'सच होने के लिए बहुत अच्छे' लगते हैं। पीड़ित:ऐसे उत्पादों के लिए भुगतान करते हैं जो कभी वितरित नहीं किए जाते हैं।संवेदनशील भुगतान विवरण साझा करते हैं जिन्हें बाद में गलत तरीके से उपयोग किया जाता है।

भारत सरकार द्वारा साइबर अपराध पर पहल

भारत सरकार ने साइबर अपराध का मुकाबला करने और डिजिटल सुरक्षा बढ़ाने के लिए कई सक्रिय कदम उठाए हैं:

इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (I4C): इसे गृह मंत्रालय के तहत स्थापित किया गया है, जो व्यापक रूप से साइबर अपराधों से निपटने के लिए एक प्रमुख एजेंसी के रूप में काम करता है। हाल ही में इसे मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पी एम एल ए) के तहत अधिकृत किया गया, ताकि प्रवर्तन निदेशालय जैसे एजेंसियों के साथ समन्वय स्थापित किया जा सके।

राष्ट्रीय साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल (एन सी आर पी): यह प्लेटफ़ॉर्म नागरिकों को साइबर अपराधों की रिपोर्ट करने की सुविधा देता है, खासकर महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए। पीड़ितों की मदद के लिए टोल-फ्री हेल्पलाइन 1930 भी संचालित की गई है।

साइबर स्वच्छता केंद्र: एक बोटनेट सफाई और मालवेयर विश्लेषण केंद्र जो हानिकारक सॉफ़्टवेयर का पता लगाने और हटाने के लिए मुफ्त टूल प्रदान करता है।

जन जागरूकता अभियान: CERT-In के जागरूकता दिवस जैसे पहल नागरिकों को ऑनलाइन सुरक्षा और

असुरक्षित नेटवर्क के उपयोग से जुड़े जोखिमों के बारे में शिक्षित करते हैं।

भारत में साइबर अपराध की वास्तविक घटनाएँ

भारत ने हाल के वर्षों में कई हाई-प्रोफाइल साइबर अपराध घटनाओं का सामना किया हैः

AIIMS साइबर हमला (2022): ऑल इंडिया इंस्टीट ्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज पर रैनसमवेयर हमले ने महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को बाधित किया, जिससे सार्वजनिक क्षेत्र की प्रणालियों की कमजोरियों का पता चला।

Wazir X क्रिप्टो एक्सचेंज उल्लंघन (2024): इस उल्लंघन ने संवेदनशील उपयोगकर्ता के डेटा को उजागर किया, जिससे डिजिटल वित्तीय प्लेटफार्मों के साथ जुड़े जोखिमों पर प्रकाश डाला गया।

सीबीआईकी साइबर क्राइम पर कार्रवाई (2025): केंद्रीय जांच ब्यूरो ने चार अंतर्राष्ट्रीय साइबर अपराध सरगनाओं को गिरफ्तार किया, जिससे साइबर अपराधियों की बढ़ती जटिलता का पता चला।

विश्व संगठनों की दृष्टि

विश्व संगठनों ने साइबर अपराध की सीमा पार प्रकृति को संबोधित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर जोर दिया हैः

संयुक्त राष्ट्र साइबर अपराध विरोधी संधि (2024): यह ऐतिहासिक संधि मानवाधिकारों की रक्षा करते हुए साइबर अपराधों से निपटने में वैश्विक सहयोग को मजबूत करने का प्रयास करती है। यह साक्ष्य विनिमय, पीड़ितों की सुरक्षा, और अपराधों की रोकथाम के लिए उपकरण प्रदान करती है।

UNODC का वैश्विक साइबर अपराध कार्यक्रम: ड्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय तकनीकी सहायता, विधायी सुधार और साइबर खतरों से मुकाबला करने के लिए सदस्य राज्यों का समर्थन करता है।

इन खतरों से बचाव

इन खतरों का मुकाबला करने के लिए, व्यक्तियों को कुछ बुनियादी सावधानियाँ अपनानी चाहिएः

ईमेल, लिंक, या संदेश का स्रोत सत्यापित किए बिना क्लिक करने से बचें।

मजबूत, अद्वितीय पासवर्ड का उपयोग करें और दो-कारक प्रमाणीकरण सक्षम करें।

असुरक्षित चैनलों पर व्यक्तिगत या वित्तीय जानकारी साझा करने से बचें।

नियमित रूप से सॉफ़्टवेयर अपडेट करें और विश्वसनीय एंटीवायरस प्रोग्राम का उपयोग करें।

साइबर अपराध तकनीकी प्रगति के साथ आने वाली चुनौतियों की स्पष्ट याद दिलाता है। साइबर सुरक्षा को प्राथमिकता देकर, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करके, और सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाकर, हम सभी के लिए एक सुरक्षित डिजिटल भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं। जागरूकता, सतर्कता, और साइबर सुरक्षा जैसे सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाकर, हम व्यक्तियों और संगठनों की रक्षा कर सकते हैं। जैसे-जैसे हम नवाचार को अपनाते हैं, हमें अपनी भविष्य की सुरक्षा के लिए तैयारियों को भी मजबूत करना चाहिए।

एक यादगार अनुभवः अजनबियों की दयालुता

श्रीमती स्मिता वी जी,
वरिष्ठ लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची

मेरे ज़ेहन में सबसे यादगार अनुभवों में से एक है ज़रूरत के समय अजनबियों द्वारा दिखाई गई दयालुता। ऐसे कई उदाहरण हैं जब लोगों ने मेरी और दूसरों की मदद करने के लिए अपनी हदें पार कर लीं, जिससे मेरे जीवन पर एक स्थाई प्रभाव पड़ा।

ऐसी ही एक घटना तब हुई जब मैं एक व्यस्त सड़क को पार करने की कोशिश कर रही थी, जिसमें नवीनीकरण के चलते मरम्मत कार्य चल रहा था। ट्रैफ़िक बहुत ज़्यादा थी और गाडियाँ तेज़ गति से चल रहीं थी। मैं 10-15 मिनट तक वहाँ खडी रही। सड़क पार करने में मैं हिचकिचाहट महसूस कर रही थी। जैसे ही मैं दुबारा कोशिश करने वाली थी कि अचानक एक मिनी पिकअप वैन मेरे सामने रुका और उसके चालक ने मुझे सड़क पार करने का इशारा किया। मैं उसकी दयालुता से अभिभूत हो गई और सुरक्षित रूप से सड़क पार कर गई। यह दयालुता की एक छोटी सी घटना थी, लेकिन इसने एक संवेदनशील क्षण को उत्पन्न किया। वह मेरा एक हिस्सा बन गया।

एक और उदाहरण जो मेरे मन में आ रहा है, वह यह है कि- मैं पनम्पिल्ली नगर में एक बरसात के दिन एक खाली ऑटोरिक्शा को खोजते-खोजते परेशान हो रही थी। मैं वहाँ बहुत देर तक खडी रही, एक के बाद एक ऑटोरिक्शा को रोकने की कोशिश कर रही थी, लेकिन एक भी नहीं रुक रही थी। जब मैं हार मानने ही वाली थी कि तभी कहीं से एकाएक स्विगी डिलीवरी करने वाला एक व्यक्ति ने मेरी दुर्दशा देखी और तरस आकर मेरे लिए एक ऑटोरिक्शा रुकवाया। मैं ने स्विगी डिलीवरी करने वाले उस व्यक्ति को धन्यवाद देने ही वाली थी कि वह उसे लिए बिना चला गया। मैं ऑटोरिक्शा में बैठकर अपने घर को निकाल गई। डिलीवरी करने वाले उस व्यक्ति की दयालुता और बिना कोई अपेक्षा के सहायता करने का भाव मेरे भी हिस्से में आ गया।

एक दिन, काम पर जाते समय, मैंने एक ट्रक चालक को पार्क करने की कोशिश करते देखा। एक पैदल यात्री उसे हाथ के इशारों से रास्ता दिखा रहा था और जब ट्रक पार्क हो गया, तो चालक ने उसे अंगूठा दिखाकर धन्यवाद दिया। अजनबियों को बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना एक-दूसरे की मदद करते देखना बहुत अच्छा लगा।

ये मानव संवेदना के हिस्से हैं। इसे संभालकर रखना हर एक की ज़िम्मेदारी है। तभी तो हम असल में इंसान कहलाते हैं, है न?एक मिनट निकालकर जरा सोचकर देखिए। इन अनुभवों ने मुझे सिखाया है कि दुनिया में अभी भी कई अच्छे लोग हैं जो बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना दूसरों की मदद करने के लिए तैयार हैं। उनकी दयालुता और उदारता ने मेरे जीवन पर एक स्थाई प्रभाव छोड़ा है और मैं उनके निःस्वार्थ कार्यों के लिए हमेशा आभारी रहूंगी।

मदर इंडिया एक भूमिका

श्री शेशन्द्र शिरोडकर,
सहायक निदेशक
एक.पी.ई.डी.ए. आर डी.- वेरावल

अभी अगस्त 2024 में, कोलकाता अस्पताल में एक हादसा हुआ। ट्रेनी महिला डॉक्टर के साथ अत्याचार फिर हत्या। लाश का सेमिनार हॉल में पड़े रहने देना ... राज्यों को बल्कि एक बार संपूर्ण भारत को हिला कर रख दिया और सोचने पर मजबूर किया कि क्या स्त्री हमारे देश में सुरक्षित है ? 12 साल पहले राजधानी दिल्ली में देर रात घूमती हुई प्राइवेट बस में छः दरिंदों ने एक लड़की को इतनी भयानक अवस्था में छोड़ दिया की डॉक्टर और पुलिस भी चौंक गयी। साथ ही साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को बहुत शर्मानाक होना पड़ा। कोलकाता अस्पताल में तोड़फोड़ और पुलिस पर हमला करके आम जनता ने अपनी चिड़ जाहिर की। उस वक्त बदलापुर में दो बच्चियों के साथ दुष्कर्म होने पर महाराष्ट्र की जनता ने भी अपना आक्रोश खुलकर व्यक्त किया। छोटी बच्ची, लड़की, या महिला अच्छी संस्था से जुड़ी हो या आम लोगो में से हो कोई भी सुरक्षित नहीं है यह भावना जाग उठी।

अप्रैल 2024 में मणिपुर में दो महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार हुआ। इतर अनेक छोटे राज्यों में भी महिलाओं के अत्याचार के मामले सामने आ रहे हैं। मीडिया प्रसारण ने तो दिल्ली निर्भय के बाद 12 साल में महिलाओं के खिलाफ हुए अत्याचार और जुर्म के आंकड़े और डाटा प्रसार करके माहौल गरमा गरम कर दिया। तभी जस्टीस हेमा कमेटी की रिपोर्ट ने अभिनेत्रीयों के यौन शोषण का मामला उजागर करके मलयालम सिनेमा इंडस्ट्री का काला सच जनता के सामने लाया ।

सच में यह विषय बहुत गंभीर स्थिति में पहुंच चुका है। हमार सरकार ध्यान दे रही है। महिला कल्याण विभाग ने महिलाओं की समस्या निवारण के लिए हेल्पलाइन 181 बनाई है। साथ में कानून भी अधिक कड़े किए हैं। फास्ट ट्रैक कोर्ट भी है। सबसे बढ़िया बात है कि वन स्टॉप सेंटर यानी, "सखी" वन स्टॉप सेंटर का उद्देश्य सभी प्रकार के हिंसा से पीड़ित महिलाओं को सहायता उपलब्ध कराना है । जिसका सामना वे परिवार के भीतर,

कार्य स्थल पर, समुदाय के भीतर कर सकती है। वन स्टॉप सेंटर एक ही छत के नीचे पुलिस सुविधा, चिकित्सा, कानूनी सहायता और मनोवैज्ञानिक सामाजिक परामर्श और हिंसा से ग्रस्त महिला को आश्रम सहित कई एकीकृत सेवाएं प्रदान करता है।

हमारी आबादी 145 करोड़ हो गई है। तो सिर्फ सरकार पर सब कुछ छोड़कर हमें बैठना नहीं है। एक नागरिक होने की हमारी भी एक जिम्मेदारी बनती है। हमारा देश चीन को पीछे छोड़कर आबादी में सबसे आगे है। मैं पूछना चाहता हूं जो कोई भी गुनाह कर रहे हैं क्या उनके रिश्ते में महिलाएं नहीं हैं? क्यों कोई महिला अपना पति, भाई और बेटे को अत्याचार में दोषी पाने के बाद भी बचाना चाहती है? उसे माफ करना चाहती है? हालांकि औरत का दर्द वह खुद भी समझती है। सन 1957 में "मदर इंडिया" नाम की एक हिंदी सिनेमा बनी थी। उसकी कहानी थी एक महिला की जो विपरीत परिस्थिति में हौसला रखकर संघर्ष करती है। हर परिस्थिति में डटकर खड़ी रहती है। भारत जैसे एक कृषि प्रधान देश की महिला की वह कहानी है। जो अंत में भले के लिए अपने गुंडे बेटे को स्वयं मार देती है। इस सिनेमा को एक अच्छी सिनेमा के बदले एक अच्छी विचारधारा ऐसे कहना उचित होगा।

यह वही सिनेमा है जो ऑस्कर पुरस्कार में नामांकित होने वाली पहली फिल्म थी। जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी ने बहुत चाहा। मैं समझता हूं आजादी के बाद भारतीय स्तर पर महिला के विकास लिए बहुत बड़ा काम हुआ है । महिला सशक्तीकरण से जुड़े सामाजिक, आर्थिक और राजन-ीतिक और कानूनी मुद्दे पर सरकार काम कर रही है। हम भी चाहते हैं कि गुनहगार किसी भी दबाव और कानून की आड़ में बचना नहीं चाहिए। कुछ देश में महिलाओं के साथ अत्याचार करने वाले के खिलाफ बहुत बड़ी सजा है। हाथ तोड़ देना, सूली पर लटका देना। हमें भी दोषी की सजा कठोर करनी चाहिए। दोषी की उम्र, अपराधी की स्थिति इससे महत्वपूर्ण यह है कि जिसके साथ अत्याचार हुआ है उसे न्याय मिले क्योंकि यह सिर्फ शारीरिक तनाव नहीं बल्कि मानसिक तनाव से भी जुड़ा हुआ विषय है। कुछ लोग महिलाओं के साथ अत्याचार करने वाले लोगों को बचाने के लिए उनकी सजा कम करवाने के लिए पैसे लेकर काम कर रहे हैं क्या उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं ? वह किस तरह के इंसान है? क्योंकि जो वह कर रहे हैं उनकी सोच में यह क्यों नहीं आता कि उनके घर में भी तो उनकी अपनी माँ, बहन और पत्नी हैं। झूठे आरोप में पुरुष को फसाने वाली स्त्रियां भी हैं। इसीलिए कानून के दायरे में रहकर, सबूत, कागजात के साथ सब कुछ करना पड़ता है। ईसलिए कुछ कमियां रही गई होगी और कुछ लोग उसका फायदा ले रहे हैं। इसमें ज्यादा जरूरी है कि नारी का सम्मान बचाया जाए। हम सब पुरुष अपने माँ को देखने के बाद समझते हैं कि स्त्री कितनी सवेदनशील होती है। फिर भी महिलाओं की संवेदना की कदर समाज में कम दिखती है। सरकार ने भी अभी महिलाओं के प्रति हुए अत्याचार को बढ़ते देखकर कानून सख्त करके तुरंत, कम समय न्याय मिलने पर ज़ोर दिया है। कुछ नए कानून, सजा भी लायी जाएगी ।

हमें कड़े कानून लाकर इसे बड़े प्रैक्टिकल तौर पर दिखाना है कि हमारे देश में जुर्म कम हुआ है। भारत देश को "भारत माता" कहने वाले भारत में, स्त्रियों के प्रती जुर्म दुनिया मैं सबसे कम होने चाहिए । उस दिन सभी विश्व को पता चलेगा की पृथ्वी को "धरती माता" कहने वाले भारतीय लोगों के लिए यह शब्द नहीं बल्कि विचारधारा है। भारत डिजिटल, मीडिया, व्यापार के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। नया मुकाम हासिल करने जा रहा हैं । अर्थव्यवस्था में पाचवे स्थान पर है। समाज की भलाई के लिए अपने गुंडे बेटे को मार देने वाली मां ऐसा क्रांतिकारी विचार 67 साल पहले रखने वाला भारत विचार के प्रति कितने आगे की सोच रहा था। यह आप ही देख सकते हैं। आज हम आज़ाद भारत के 77 साल पूरे कर रहे हैं और हमें याद रखना है कि जिस राष्ट्र में नारी शक्तिशाली है, वह राष्ट्र भी शक्तिशाली बनेगा।

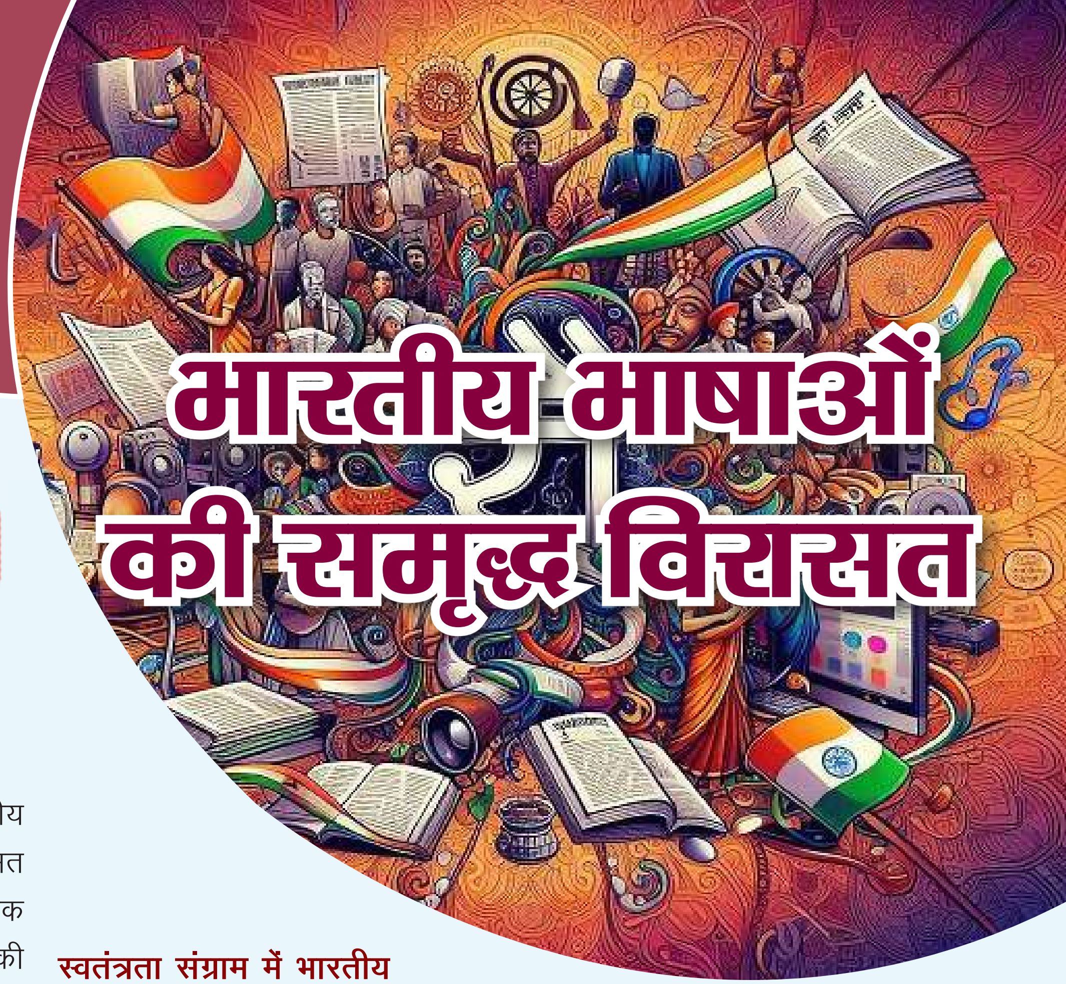

भारतीय भाषाओं की समृद्ध विरासत

डॉ. प्रदीप राज पी
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक,
मुख्यालय, कोच्ची

भारत, जो विविधता की अद्वितीय भूमि है, अपनी अद्भुत भाषाई विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यह सांस्कृतिक जीवंतता को दर्शाती है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता दी गई है और पूरे देश में सैकड़ों बोलियाँ बोली जाती हैं। यह भारत को एक वास्तविक भाषाई मोज़ेक के रूप में स्थापित करता है। प्रत्येक भाषा अपने अद्वितीय स्वाद, इतिहास और महत्व को लेकर आती है, जिससे भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान के वाहक बन जाती हैं। इन भाषाओं के समृद्ध भंडार के साथ-साथ हिंदी का विशेष स्थान है, जिसने भारतीय पहचान को विकसित करने में और उसकी विरासत को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय भाषाओं ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लोगों को एकजुट करने और राष्ट्रीय भावना को जागृत करने में योगदान दिया।

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय भाषाओं की भूमिका

भारतीय भाषाएँ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विविध समुदायों को एकजुट करने और ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ प्रतिरोध को संगठित करने के उपकरण के रूप में काम किया:

1.विविधता में एकता: भारतीय भाषाएँ सांस्कृतिक और क्षेत्रीय अंतर को पाटते हुए विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि वाले लोगों में एकता की भावना को बढ़ावा दिया। महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का इस्तेमाल प्रभावी रूप से जन समुदाय के साथ संवाद करने के लिए किया।

2.राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति: भारतीय भाषाओं में साहित्य, कविता और गीतों ने देशभक्ति और प्रतिरोध को प्रेरित किया। लेखकों और कवियों ने अपनी भाषा का उपयोग उपनिवेशी शासन की अन्यायपूर्ण नीतियों और स्वतंत्रता की आकांक्षाओं को उजागर करने के लिए किया।

3.जनता का सक्रियकरण: स्थानीय भाषाओं में भाषण, नारे और पर्चे ग्रामीण और शहरी आबादी तक पहुँचाई गई, जिससे असहयोग आंदोलन, नागरिक अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी को प्रोत्साहन मिला।

अख़बार, पत्रिकाएँ और पर्चे

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, प्रेस ब्रिटिश नीतियों को चुनौती देने और राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार करने का शक्तिशाली माध्यम बन गया। कुछ प्रमुख प्रकाशन हैं:

1.हिंदी पैट्रियट: 1853 में स्थापित यह अखबार ब्रिटिश नीतियों, विशेष

रूप से नील उत्पादन प्रणाली का विरोध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।

2.केसरी और मराठाः बाल गंगाधर तिलक द्वारा मराठी और अंग्रेजी में प्रकाशित, इन अखबारों ने राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रचार करने और सार्वजनिक राय को सक्रिय करने में योगदान दिया।

3.अमृत बाजार पत्रिकाः शुरुआत में एक बंगाली अखबार, बाद में इसे दो भाषाओं में प्रकाशित किया गया ताकि वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट से बचा जा सके। यह ब्रिटिश शासन की आलोचना करने के लिए जाना जाता था।

4. बंगालीः सुरेंद्रनाथ बनर्जी द्वारा संपादित, यह अखबार राजनीतिक सुधारों और नागरिक स्वतंत्रता का समर्थन करता था।

5.इंडियन मिररः एन.एन. सेन द्वारा प्रकाशित, यह सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर केंद्रित था, सेल्फ रूल की अवधारणा को बढ़ावा देता था।

6.वॉयस ऑफ इंडियाः दादाभाई नौरोजी द्वारा स्थापित, इसने ब्रिटिश शासन के तहत आर्थिक शोषण को उजागर किया।

7.पर्चे और पंपलेट्सः क्षेत्रीय भाषाओं में छोटे प्रकाशन बड़े इन्हें पैमाने पर वितरित किए गए ताकि लोगों को आंदोलनों, बहिष्कार, और विरोध प्रदर्शनों के बारे में शिक्षित किया जा सके।

राष्ट्रीय भावना पर प्रभाव

1. चेतना जागृतिः प्रेस ने लोगों को उनके अधिकारों और स्वतंत्रता की आवश्यकता के बारे में शिक्षित किया, सामूहिक चेतना बनाई।
2. दमन का विरोधः अखबारों और पत्रिकाओं ने ब्रिटिश शासन के अत्याचारों को उजागर किया, जिससे प्रतिरोध और विद्रोह को प्रेरणा मिली।
3. सार्वजनिक राय का निर्माणः प्रेस ने सार्वजनिक राय को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, नेताओं और आंदोलनों के लिए समर्थन जुटाया।

भारतीय भाषाएँ और प्रेस स्वतंत्रता संग्राम को एक जन आंदोलन में बदलने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, यह सुनिश्चित करते हुए कि स्वतंत्रता की पुकार पूरे राष्ट्र में गूँजे।

भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक पहलू

भारतीय भाषाएँ ऐसे अद्वितीय वैज्ञानिक पहलुओं को प्रस्तुत करती हैं जो उन्हें प्रौद्योगिकी में अत्यधिक प्रासंगिक बनाते हैं:

1. ध्वनि की सटीकताः भारतीय भाषाएँ, विशेष रूप से संस्कृत, अपने ध्वनि संबंधी सटीकता के लिए जानी जाती हैं। हिंदी और संस्कृत में प्रयुक्त देवनागरी लिपि ध्वनियों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करती हैं, जिससे यह कम्प्यूटेशनल मॉडल और स्पीच रिकग्निशन सिस्टम के लिए आदर्श बन जाती है।
2. मॉर्फोलॉजिकल समृद्धिः भारतीय भाषाएँ जटिल संरचना प्रदान करती हैं, जिसमें व्याकरण और संशोधन शामिल होते हैं। यह समृद्धि प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एन एल पी) और मशीन अनुवाद प्रणालियों के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान करती है।
3. लिपि विविधताः भारत की भाषाई विविधता में देवनागरी, तमिल, बंगाली और तेलुगु जैसी लिपियाँ शामिल हैं। ये लिपियाँ बहुभाषी कम्प्यूटेशनल उपकरणों को विकसित करने के लिए चुनौतियाँ और अवसर प्रदान करती हैं।
4. व्याकरण औपचारिकताः पाणिनी द्वारा व्यवस्थित संस्कृत व्याकरण अत्यधिक संरचित और नियम आधारित है, जो प्रोग्रामिंग तर्क जैसा दिखता है। इसने कम्प्यूटेशनल भाषा विज्ञान और एल्गोरिथम डिज़ाइन को प्रेरित किया है।

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र

1. नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एन एल पी): भारतीय भाषाएँ भावना विश्लेषण, टेक्स्ट-टू-स्पीच सिस्टम, और चैटबॉट्स जैसी एन एल पी अनुप्रयोगों में महत्वपूर्ण हैं। गूगल ट्रांस्लेट और इंडिक कीबोर्ड जैसे टूल्स भारतीय भाषाओं के कम्प्यूटेशनल मॉडल पर निर्भर करते हैं।
2. मशीन अनुवादः भारतीय भाषाओं की जटिलता ने मशीन अनुवाद प्रणालियों में प्रगति को प्रेरित किया है, जिससे

भाषाई बाधाओं के पार सहज संचार संभव हुआ है।

3. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए आई): भारतीय भाषाओं में ए आई अनुप्रयोग वॉयस असिस्टेंट्स, स्वचालित ट्रांसक्रिप्शन और भाषा निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ पहुँच और डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देती हैं।

4. प्रोग्रामिंग लॉजिकः संस्कृत व्याकरण की संरचित प्रकृति ने प्रोग्रामिंग प्रतिमानों को प्रेरित किया है, सिंटैक्स विश्लेषण और त्रुटि पहचान के लिए एल्गोरिदम को प्रेरित किया है।

समाज पर प्रभाव

भारतीय भाषाओं ने न केवल सांस्कृतिक समृद्धि को बनाए रखा बल्कि समाज को सुधारने और आधुनिक युग में प्रगति के पथ को भी प्रेरित किया। दक्षिण भारत की द्रविड़ भाषाओं जैसे तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ से लेकर उत्तर भारत की इंडो-आर्यन भाषाएँ जैसे हिंदी, बांग्ला और मराठी तक भाषाई विविधता असाधारण है। ऑस्ट्रोएशियाटिक और तिब्बती-बर्मी जैसे अन्य भाषा परिवार भारत के भाषाई परिदृश्य में और अधिक समृद्धि लाती है। यह बहुभाषिकता समावेशिता को बढ़ावा देती है और समुदायों को अपनी विशिष्ट परंपराओं को बनाए रखने की अनुमति देती है, जबकि वे सामूहिक भारतीय भावना में योगदान करते हैं।

भारतीय भाषाएं और साहित्य

1. संस्कृतः रामायण- वाल्मीकि; महाभारत- व्यास; अभिज्ञानशाकुंतलम- कालिदास।
2. तमिलः तिरुक्कुरल- तिरुवल्लुवर; संगम साहित्य।
3. हिंदीः गोदान- प्रेमचंद; मधुशाला- हरिवंश राय बच्चन; कामायनी- जयशंकर प्रसाद।
4. बंगालीः गीतांजलि और चोखेर बाली- रवींद्रनाथ टैगोर।
5. मराठीः शिवाजी के पोवाडे; संत तुकाराम द्वारा रचनाएँ।
6. उर्दूः दीवान-ए-ग़ालिब-मिर्ज़ा ग़ालिब; शाहनामा फिरदौसी (फारसी प्रभाव)।

हिंदीः एक एकीकृत करने वाली भाषा

हिंदी, जो इंडो-आर्यन परिवार की एक भाषा है, एक अनोखी और महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह केंद्र सरकार की राजभाषा है और देश के विविध क्षेत्रों को जोड़ने का एक पुल बनती है। यह 46% से अधिक जनसंख्या द्वारा उनकी पहली भाषा के रूप में बोली जाती है और लाखों लोगों द्वारा समझी जाती है, हिंदी देश को एकजुट रखने वाले एक धागे के रूप में कार्य करती है। संस्कृत,प्राकृत तथा अपभ्रम्श से समृद्ध, हिंदी की साहित्यिक परंपरा अनोखी है। तुलसीदास की कालातीत कविता से लेकर समकालीन लेखकों जैसे डॉ. रामदरश मिश्र तक, हिंदी साहित्य भारतीय जीवन और चिंतन के सार को पकड़ता है। 'हिंदी दिवस' जैसे उत्सव इस भाषा के महत्व को उजागर करती है और इसे तेजी से वैश्वीकृत हो रही दुनिया में बढ़ावा देने का कार्य करती है। महत्त व्यक्तियों द्वारा हिन्दी के बारे में बताई गई कुछ बातें:-

1. **महात्मा गांधीः** 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।'
2. **आचार्य विनोबा भावेः** 'मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।'
3. **डॉ. राजेंद्र प्रसादः** 'जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।'
4. **राहुल सांकृत्यायनः** 'हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।'
5. **कमलापति त्रिपाठीः** 'हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।'

अतः हिन्दी भाषा पूरे भारत की लिंक लैंगवेज़ के रूप में कार्य कर सकती है और इसे संभव बनाने के लिए शैक्षणिक, व्यापार, व्यवसाय, विज्ञान आदि क्षेत्रों में इसका व्यापक प्रयोग करना जरूरी है जो इसे न सिर्फ अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं से शब्दों को ग्रहण कर समृद्ध बनाएगा बल्कि इसे वैश्विक तौर पर स्वीकृति भी प्राप्त होगी।

वैश्वीकरण के बीच संरक्षण

वैश्वीकरण ने अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं को

प्रभावशाली माध्यमों के रूप में प्रस्तुत किया है, फिर भी भारतीय भाषाओं का आकर्षण और महत्व कम नहीं हुआ है। इस भाषाई संपत्ति को संरक्षित करने के लिए प्रयास जारी हैं। डिजिटल पहलों, क्षेत्रीय साहित्य के अनुवाद और समर्पित भाषा अकादमियों के माध्यम से इसे मुमकिन बनाने की पूरी कोशिश की जा रही है।

भारत की भाषाई विविधता न केवल एक सांस्कृतिक संपत्ति है, बल्कि विविधता में एकता का प्रतीक भी है। भारतीय भाषाएं इस प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की आत्मा को अभिव्यक्त करती है और यह भारत की पहचान का एक अभिन्न हिस्सा बनी हुई है। यह वक्ताओं, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं के सामूहिक प्रयासों के माध्यम से है कि भारतीय भाषाओं की विरासत आने वाली पीढ़ियों तक बनी रहेगी।

आधुनिक प्रभाव

आधुनिक युग में, हिंदी सहित भारतीय भाषाएँ, भारत की विरासत को संरक्षित और प्रचारित करने का कार्य कर रही हैं:

सिनेमा: हिंदी-प्रधान बॉलीवुड तथा भारत के अन्य क्षेत्र की सिनेमा भारतीय संस्कृति का वैश्विक दूत बन गया है, जो पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक कथाओं का मिश्रण प्रस्तुत करता है।

प्रौद्योगिकी और साहित्यः भारतीय भाषाएँ तेजी से प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी पैठ जमा रही है, जिससे वे वैश्वीकरण के युग में भी प्रासंगिक बनी हुई हैं। डिजिटल मीडिया के माध्यम से हिंदी और अन्य भाषाओं को संरक्षित और विस्तार दिया जा रहा है, जिससे सांस्कृतिक गर्व को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष

भारतीय भाषाएँ अपने वैज्ञानिक ढांचे और सांस्कृतिक गहराई के साथ भारत के विकास का केंद्र रहीं हैं। चाहे इतिहास को आकार देना हो, स्वतंत्रता के लिए लोगों को प्रेरित करना हो, या डिजिटल युग में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखना हो,अपनी पूरी क्षमता के साथ भारतीय मानस में विद्यमान है। अपनी भाषाओं के माध्यम से, भारत ने अपनी सांस्कृतिक जीवंतता और ऐतिहासिक निरंतरता को बनाए रखा है, जबकि आधुनिकता को भी अपनाया है। ये भाषाई खज़ाने भारत की पहचान को परिभाषित करते हैं, अतीत को वर्तमान से जोड़ते हैं और भविष्य को आकार देते हैं।

ग़ज़ल

कभी किसी को मुकम्मल[1] जहान[2] नहीं मिलता
कहीं ज़मीन कहीं आसमान नहीं मिलता

तमाम[3] शहर में ऐसा नहीं खुलूस[4] न हो
जहां उम्मीद हो इसकी वहाँ नहीं मिलता

कहाँ चराग[5] जलाएं कहाँ गुलाब रखें
छतें तो मिलती हैं लेकिन मकान नहीं मिलता

यह क्या अज़ाब[6] है सब अपने आप में गुम है
ज़बाँ[7] मिलती है मगर हम-ज़बाँ[8] नहीं मिलता

निदा फाज़ली

(1. पूरा 2. दुनिया 3. सारे
4. प्रेम 5. चिराग 6. दंड या दर्द
7. भाषा 8. अपना)

चिंतन शिविर

दिनांक 02 तथा 03 मई 2024 को हयात रीजेंसी कोच्ची मलयाटटूर में चिंतन शिविर 'एम पी ई डी ए फील्ड कार्यालयों एवं सोसाइटियों के साथ परामर्श कार्यशाला' संपन्न हुआ। इसमें मुख्यालय के अनुभागों एवं 'क','ख' तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित फील्ड कार्यालयों को वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के प्रभावी एवं उत्तम निष्पादन के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय राजभाषा ट्रॉफी प्रदान किया गया।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय श्री डी वी स्वामी भा प्र से के कर कमलों से संबंधित क्षेत्रीय कार्यालयों और अनुभागों के प्रमुखों/प्रतिनिधियों ने राजभाषा ट्रॉफी स्वीकार किया।

फील्ड कार्यालय ('क' तथा 'ख' क्षेत्र)

श्री सुब्रय पवार, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग , मुंबई - प्रथम

श्री रज़ाक अली, उप निदेशक, उप क्षेत्रीय प्रभाग , वलसाड - द्वितीय

श्री श्रीमाली विनोद कुमार, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग , वेरावल - तृतीय

'ग' क्षेत्र

श्री जयबाल.ए, संयुक्त निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा - प्रथम

श्री धीरित एक्का, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता - द्वितीय

श्री अर्चिमन लाहिडी, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, भुवनेश्वर - तृतीय

अनुभाग, मुख्यालय, कोच्ची

श्री वी. वी. सुरेश कुमार, उप निदेशक, कार्मिक अनुभाग - प्रथम

श्री पी.के.विनु, उप निदेशक, प्रशासन अनुभाग - द्वितीय

श्री भूषण एस पाटिल, सहायक निदेशक, सांख्यिकी - तृतीय

शिक्षण योजना

राजभाषा नीति के तहत केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों के अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपना कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करना अपेक्षित है। इस को संभव बनाने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने विविध प्रशिक्षण केन्द्रों तथा उनमें विविध प्रशिक्षण एवं शिक्षण योजनाएं जैसे हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि, प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, पारंगत आदि की व्यवस्था की जिसके आधार पर अप्रशिक्षित अधिकारियों/ कर्मचारियों को केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान एवं उप संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा सके। अतः यह प्रत्येक कार्यालय की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने अप्रशिक्षित अधिकारी/ कर्मचारी की पहचान करे तथा उन्हें हिन्दी शिक्षण योजना के तहत विविध केन्द्रों में भेजे और उन्हें प्रशिक्षण दिलाएं। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण से वर्ष 2024-25 के दौरान पारंगत प्रशिक्षण के लिए 05, हिन्दी आशुलिपि के लिए 02 तथा हिन्दी टंकण के लिए 01 कर्मचारी को नामित किया गया।

पारंगत

श्रीमती अंजु

श्रीमती वीणा के पी

श्री ओम कुमार जे

श्रीमती सुमनामोल पी एस

श्रीमती शिबी मोहनन

हिन्दी टंकण

श्री श्रीभरत एस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण में 21 जून 2024 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया जिसमें एमपीईडीए के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की कुछ झलकियाँ :

हिन्दी कार्यशाला एवं राजभाषा संगोष्ठी

एमपीईडीए में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए यहाँ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में कार्यालयीन कार्य करते समय आने वाले दिक्कतों का समाधान करने और उन्हें सक्षम बनाने के उद्देश्य से हर तिमाही के दौरान मुख्यालय के अनुभागों के लिए एक कार्यशाला एवं फील्ड कार्यालयों के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इन कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों में हिन्दी तथा राजभाषा से संबंधित विविध विषयों पर सत्र चलाए जाते हैं। इसके लिए बाहर से एक विषय विशेषज्ञ को बुलाया जाता है। कुछ झलकियाँ:

जून, 2024 को समाप्त होने वाली तिमाही के लिए दिनांक 19.06.2024 को आयोजित कार्यशाला में एमपीईडीए के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना ज्ञान साझा करते हुए श्री किरण अय्यर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, सीमा-शुल्क, कोच्ची।

जुलाई-सितंबर, 2024 को समाप्त होने वाली तिमाही के लिए दिनांक 26.09.2024 को आयोजित कार्यशाला में एमपीईडीए के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना ज्ञान साझा करते हुए श्री पी रमेश प्रभु,मुख्य राजभाषा अधीक्षक, बीपीसीएल, कोच्ची।

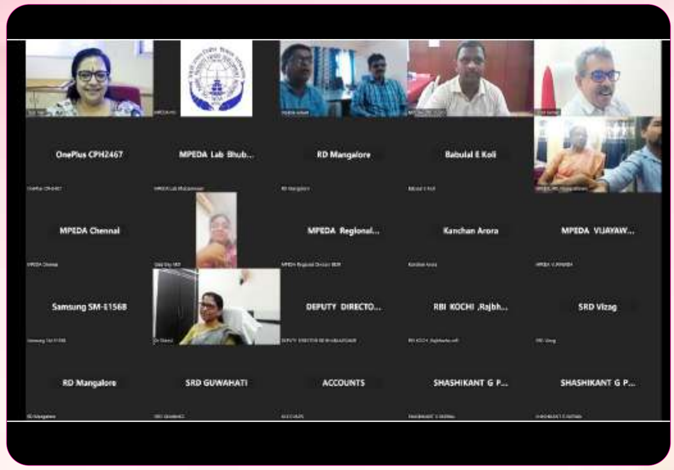

जून, 2024 को समाप्त होने वाली तिमाही के लिए दिनांक 15.05.2024 को वीडियो कॉन्फेरेंसिंग द्वारा आयोजित संगोष्ठी में एमपीईडीए के फील्ड कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना ज्ञान साझा करते हुए डॉ.मधुशील आयिल्यत्त, प्रबंधक, आरबीआई, कोच्ची।

दिसंबर, 2024 को समाप्त होने वाली तिमाही के लिए दिनांक 27.12.2024 को वीडियो कॉन्फेरेंसिंग द्वारा आयोजित संगोष्ठी में एमपीईडीए के फील्ड कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना ज्ञान साझा करते हुए श्री बिबिन वर्गीस,वरिष्ठ प्रबंधक,केनरा बैंक, कोच्ची।

प्रोत्साहन योजनाएं

वर्ष 2023-2024 के दौरान समुद्री उत्पााद निर्यात विकास प्राधिकरण के मुख्यालय एवं फील्ड कार्यालयों में फाइलों एवं रजिस्टरों में 'क' एवं 'ख' क्षेत्र में कम से कम 20,000 हिन्दी शब्द/वाक्य और 'ग' क्षेत्र में 10,000 हिन्दी शब्द/वाक्य लिखने हेतु निम्नलिखित अधिकारियों/ कर्मचारियों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की नकद पुरस्कार योजना के तहत नकद पुरस्कार दिया गया :-

क्रम सं	अधिकारियों/ कर्मचारियों के नाम एवं पदनाम	क्षेत्र	पुरस्कार	राशि
1	श्रीमती कंचन अरोडा, लेखा सहायक, टी.पी.ओ, नई दिल्ली	क	प्रथम	5,000/-
2	श्रीमती महिमा रान वर्मा, कनिष्ठ लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची	क	प्रथम	5,000/-
3	श्री शशिकांत जी पडवल, तकनीकी सहायक, क्षे.प्र, मुम्बई	ख	प्रथम	5,000/-
4	श्री बाबुलाल एका कोली, तकनीकी सहायक, क्षे.प्र, मुम्बई	ख	प्रथम	5,000/-
5	श्री मंगेश मोहन गॉवडे, फील्ड पर्यवेक्षक, क्षे.प्र, मुम्बई	ख	द्वितीय	3,000/-
6	श्री अतुल राव साहेब साठे, फील्ड पर्यवेक्षक, क्षे.प्र, मुम्बई	ख	द्वितीय	3,000/-
7	डॉ गोपाल आनंद कंटिकाटला, सहायक निदेशक, क्षे.प्र, भुबनेश्वर	ग	प्रथम	5,000/-
8	श्रीमती उषा गोपालकृष्णन, अनुभाग अधिकारी, मुख्यालय, कोच्ची	ग	प्रथम	5,000/-
9	श्री के शिवराजन, उप निदेशक, क्षे.प्र, विजयवाडा	ग	द्वितीय	3,000/-
10	श्री सुरेश कुमार.वी.वी, उप निदेशक (का.),मुख्यालय, कोच्ची	ग	द्वितीय	3,000/-
11	श्री दिलीप कुमार.पी.एस, कनिष्ठलिपिक,मुख्यालय, कोच्ची	ग	द्वितीय	3,000/-
12	श्री ओमकुमार.जे, वरिष्ठि लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची	ग	तृतीय	2,000/-
13	श्रीमती सुजा.आर, वरिष्ठि लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची	ग	तृतीय	2,000/-
14	श्रीमती रिजी.आर.के, वरिष्ठक लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची	ग	तृतीय	2,000/-
15	श्री मिन्टुज बरफुकन,सहायक, उ.क्षे.प्र, गुवाहाती	ग	तृतीय	2,000/-
16	श्रीमती स्मिता.वी.जी,वरिष्ठि लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची	ग	तृतीय	2,000/-

वर्ष 2023-2024 के दौरान समुद्री उत्पाोद निर्यात विकास प्राधिकरण के मुख्यालय एवं फील्ड कार्यालयों में फाइलों एवं रजिस्टरों में 'क' एवं 'ख' क्षेत्र में कम से कम 20,000 हिन्दी शब्द /वाक्य और 'ग' क्षेत्र में 10,000 हिन्दी शब्द /वाक्य लिखने हेतु निम्नलिखित अधिकारियों/ कर्मचारियों को प्राधिकरण की विशेष नकद पुरस्कार योजना के तहत नकद पुरस्कार दिया गया :-

क्रम सं	अधिकारियों/ कर्मचारियों के नाम एवं पदनाम	क्षेत्र	पुरस्कार
1	श्रीमती सुमा.ए, सहायक निदेशक, गु.नि.प्रयोगशाला, भीमावरम	ग	1,000/-
2	श्री ए.जी.आल्फ्रेयड, तकनीकी सहायक, मुख्यालय, कोच्ची	ग	1,000/-
3	श्रीमती विनीता.के.वी, तकनीकी अधिकारी, मुख्यालय, कोच्ची	ग	1,000/-
4	श्रीमती शैमामोल.के.पी, कनिष्ठ लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची	ग	1,000/-
5	श्रीमती.वीणा.के.पी, वरिष्ठ लेखाकार,मुख्यालय, कोच्ची	ग	1,000/-
6	श्री राकेश थामस कुरियन, उप निदेशक, टी.पी.ओ, नई दिल्ली	ग	1,000/-
7	श्रीमती शिबी मोहनन, वरिष्ठ लिपिक, मुख्यालय, कोच्ची	ग	1,000/-

वर्ष 2023-2024 के दौरान समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के फील्ड कार्यालयों में नोटिस बोर्ड में हिन्दी शब्द लिखने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों/ कर्मचारियों को नकद पुरस्कार दिया गयाः-

क्रम सं	कर्मचारी का नाम और पदनाम	कार्यालय का नाम	अवधि	पुरस्कार
1	श्री मिन्टु बरफुकन, सहायक	उ.क्षे.प्र, गुवाहाती	अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक	750/-
2	श्रीमती मीनाबेन हरीश पटेल, फील्ड सहायक	क्षे.प्र, वलसाड	अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक	750/-
3	श्रीमती के.सरला, कनिष्ठ लिपिक	क्षे.प्र, विजयवाडा	अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक	750/-
4	श्रीए.रविचंद्रन, कनिष्ठ लिपिक	उ.क्षे.प्र, नागपट्टिनम	अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक	750/-
5	श्रीमती जे.हैमावती, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी	गु.नि.लैब, भुवनेश्वर	अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक	750/-

ई-फाइलों में हिन्दी में नोट एवं मसौदा लेखन हेतु वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ

1. a brief note is placed below – संक्षिप्त नोट नीचे है
2. above cited – ऊपर कथित (लिखित)
3. accord approval to – कृपया...... को अनुमोदित करें
4. by acertain date – नियत तारीख तक
5. behind schedule – निर्धारित समय से पीछे या के बाद
6. by no means – कभी नहीं, कथापि नहीं
7. come into force – प्रवृत्त होना, लागू होना
8. charge handed over – कार्यभार सौंप दिया
9. ceased to be payable – देय नहीं रहा
10. damage claim – नुकसानी दावा
11. delay in disposal – निपटान में देरी/ विलंब
12. draft is concurred in – प्रारूप से सहमति है/ मसौदे से सहमति है
13. errors in verification – सत्यापन में त्रुटियाँ
14. explained in your letter – आपके पत्र में स्पष्ट किया गया
15. extension of posts – पदों की अवधि बढ़ाना
16. failed to fulfil the condition – शर्तों का पालन नहीं किया गया
17. fair and equitable – उचित और साम्यिक/ उचित एवं न्यायसंगत
18. for disposal – निपटान के लिए
19. general conditions of contract – ठेके/ संविदा की सामान्य शर्तें
20. give effect to – कार्यान्वित करें/ प्रभावी करें
21. governed by the rules – नियमों द्वारा शासित
22. has been dealt with suitably – समुचित कार्रवाई की गई है
23. here in before – इसमें इसके पहले/ इसमें इसके पूर्व

24.	highly objectionable	–	अत्यंत आपत्तिजनक
25.	I authorise you	–	मैं आपको प्राधिकार देता हूँ
26.	In compliance with	–	का पालन करते हुए/ के अनुपालन में
27.	In continuation of	–	के क्रम में/ के सिलसिले में/ के तारतम्य में
28.	just now	–	अभी तुरंत
29.	justification for the proposal	–	प्रस्ताव का औचित्य
30.	justification has been accepted	–	औचित्य स्वीकार कर लिया गया है
31.	kindly instruct further	–	कृपया अनुदेश दें
32.	keep with the file	–	फाइल के साथ रखिए
33.	keeping in view	–	को ध्यान में रखते हुए
34.	leave of absence	–	अनुपस्थिति की अनुमति
35.	letter of acknowledgement	–	पावती पत्र/ अभिस्वीकृति पत्र
36.	letter of intent	–	आशय पत्र
37.	matter in dispute	–	विवादास्पद मामला/ विवादित मामला
38.	may be permitted	–	अनुमति दी जाए
39.	may be sanctioned	–	मंजूर किया जाए
40.	needs no comment	–	टिप्पणी की आवाश्यकता नहीं
41.	non-compliance	–	अपालन
42.	not abene (N.B.)	–	ध्यान दें, टिप्पणी
43.	on behalf of	–	की ओर से
44.	on due date	–	सम्यक तारीख को
45.	on probation	–	परिवीक्षाधीन
46.	please expedite compliance	–	शीघ्र अनुपालन कीजिए
47.	preceding notes	–	पूर्ववर्ती टिप्पणियाँ
48.	pros and cons	–	पक्ष -विपक्ष
49.	question of propriety	–	औचित्य का प्रश्न
50.	quick-closeout rates	–	शीघ्र समापन दरें

51. quoted below – नीचे उद्धृत

52. raise objection – आपत्ति उठाना

53. reminder may be sent – अनुस्मारक भेजा जाए/ स्मरण-पत्र भेज दें

54. resubmitted as desired – यथापेक्षा पुनः प्रस्तुत है

55. subject to contract – संविदा के अधीन

56. self-contained note – स्वतः पूर्ण टिप्पण

57. shall be construed – इसका यह अर्थ लगाया जाए

58. the file in question is placed below – अपेक्षित फाइल नीचे राखी है

59. take-over charge – कार्यभार ग्रहण करना

60. through proper channel – उचित माध्यम से

61. until further order (s) – अगले आदेश होने तक

62. up to date – अद्यतन

63. urgent attention may please be given – कृपया तुरंत ध्यान दें

64. vide letter no. – पत्र सं......... देखिए

65. verified and found correct – पड़ताल की और ठीक पाया

66. vetting of draft – प्रारूप का पुनरीक्षण

67. wanting documents – अपेक्षित दस्तावेज़

68. with effect from – .... से, ... से प्रभावी

69. withdrawal of recognition – मान्यता वापस लेना

70. yearly clearance – वार्षिक निकासी

71. you may take necessary action – आप आवश्यक कार्रवाई करें

72. your reply should reach this office by at the latest – आपका उत्तर इस कार्यालय में अधिक से अधिक .... तारीख तक पहुँच जाना चाहिए

73. you are here by advised – इसके द्वारा आपको सूचित किया जाता है

74. your request is granted – आपका अनुरोध स्वीकार किया जाता है

75. zone of consideration – विचार-परिधि

पार्वती पी. आर

(पुत्री) स्मिता वी.जी, वरिष्ठ लिपिक

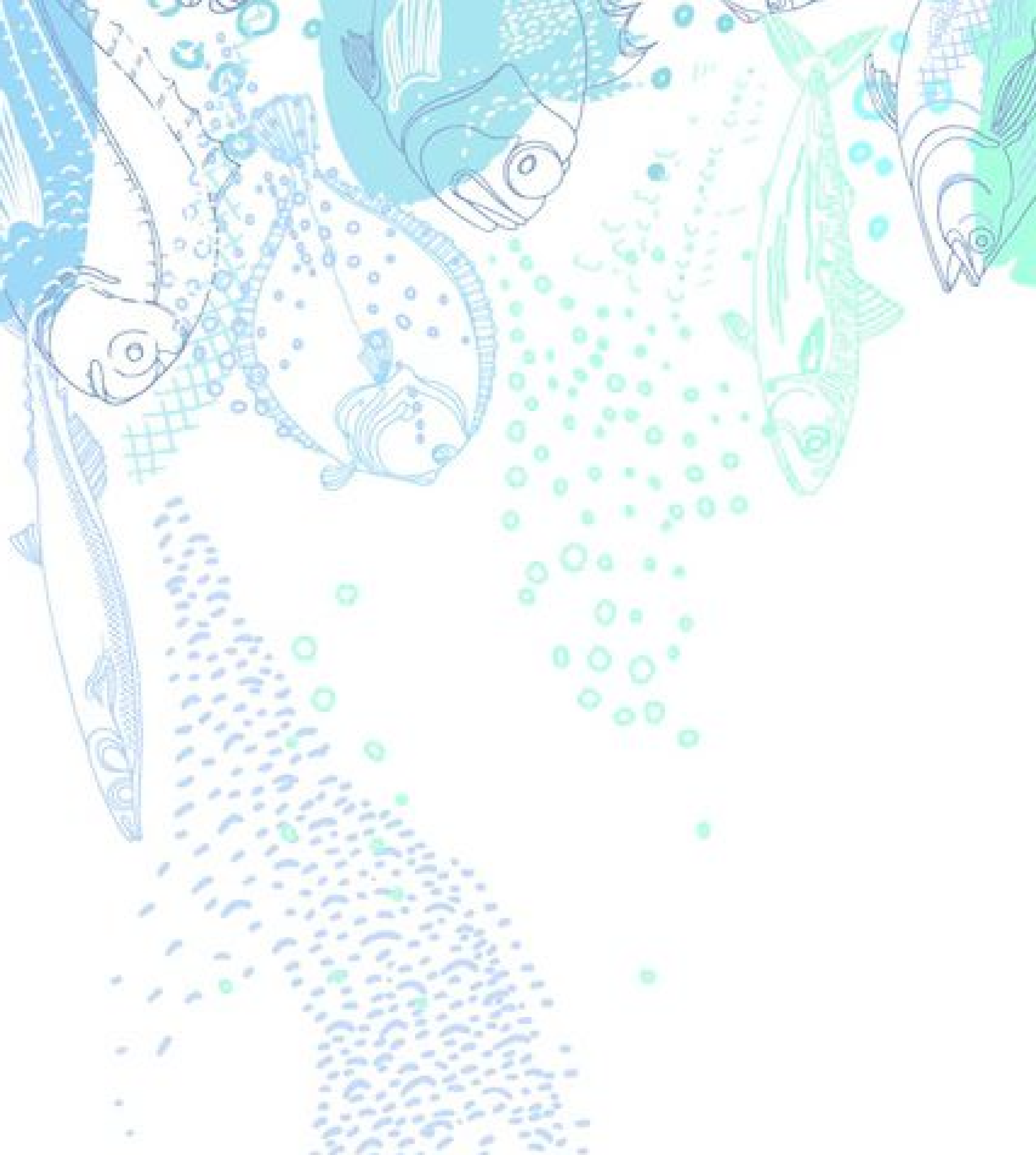

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू, डाक पेटी सं 4272
कोच्ची- 682036. भारत